रुद्राक्ष माहात्म्य
एवं
धारण विधि



10-1

रुद्राक्ष महात्म्य
और
धारण विधि

रुद्राक्षधारणां च श्रेष्ठं न किंचिदपि विद्यते ।
(रुद्राक्ष धारण करने से कोई वस्तु श्रेष्ठ नहीं है)

संशोधित संस्करण

इस प्रथम संस्करण में रुद्राक्ष की पहचान, खरीदते समय सावधानियाँ व गौरी शंकर तथा त्रिजुगी से सम्बन्धित उपयोगी सामग्री बढ़ा दी गई है।

रुद्राक्ष के सम्बन्ध में भ्रान्तियों से बचाकर उचित मार्गदर्शन कराने वाली प्रमाणित पुस्तक

रुद्राक्ष महात्म्य और धारण विधि

❋ रुद्राक्ष महात्म्य ❋ रुद्राक्ष की उत्पत्ति

❋ रुद्राक्ष के भेद ❋ रुद्राक्ष धारण विधि

❋ रुद्राक्ष के १४ प्रकार के नाम और महिमा

❋ रुद्राक्ष जपमाला के लक्षण और महात्म्

❋ रुद्राक्ष महात्म्य (विविध पौराणिक ग्रन्थों से)

❋ रुद्राक्ष के लक्षण और मन्त्र न्यास

❋ रुद्राक्ष की परम शक्तियाँ

❋ रुद्राक्ष का विविध रोगों में प्रयोग

❋ रुद्राक्ष खरीदते समय सावधानियाँ

❋ रुद्राक्ष की पहचान सम्बन्धी जानकारी

तथा और भी अनेक आवश्यक बातों का संकलन।

संग्रहकर्ता–बाबा औघर नाथ तपस्वी

मूल्य : १०-००

गर्ग प्रकाशन मन्दिर मथुरा.

१९९१

प्रकाशक :

गर्ग प्रकाशन मन्दिर

कंसखार बाजार मथुरा।

मूल्य—[illegible] रुपये मात्र



मुद्रक :
व्यास प्रिंटिंग प्रेस,
गजा पायसा, मथुरा.

रुद्राक्ष के सम्बन्ध में

- रुद्राक्ष भगवान शंकर का प्रिय आभूषण है।
- रुद्राक्ष अकाल-मृत्यु हारी है।
- रुद्राक्ष दीर्घायु प्रदान करता है।
- रुद्राक्ष संन्यासियों के लिए धर्म और मोक्ष प्रदान करता है।
- रुद्राक्ष गृहस्थियों के लिए अर्थ और काम का दाता है।
- रुद्राक्ष से स्त्रियों को पुत्र-लाभ होता है।
- रुद्राक्ष शारीरिक व्याधियों का शमन करता है।
- रुद्राक्ष मन को शान्ति प्रदान करता है।
- रुद्राक्ष कुण्डलिनी जागृत करने में सहायता करता है।
- रुद्राक्ष सभी वर्णों के पापों का नाश करता है।
- रुद्राक्ष भूतप्रेतादि बाधाओं से छुटकारा दिलाता है।
- रुद्राक्ष की पूजा से सभी दुःखों से मुक्ति मिलती है।
- रुद्राक्ष किसी भी कार्य की सिद्धि के लिए धारण करें, चालीस दिन में प्रभाव दिखाता है।

इस पुस्तक की सामग्री का संग्रह निम्नलिखित पुरातन ग्रन्थों से किया गया है—

१. श्री शिव महापुराण भाषा-टीका

२. श्री मद्देवीभागवत पुराण भाषा-टीका

३. निर्णय सिन्धु भाषा-टीका

४. रुद्राक्ष धारण विधि (वेंकटेश्वर प्रेस बम्बई द्वारा प्रकाशित पुस्तक की एक अति प्राचीन जीर्ण प्रति)

अनुक्रमणिका

श्री गणेश साधना तन्त्र

यह ग्रन्थ रत्न श्री महागणपति साधना के लिए पूर्व उपयोगी सिद्ध हुआ है। यह महान कलिकाल में हर मनुष्य लक्ष्मीवान एवं आरोग्य बनना चाहता है। अतः आप हमारे ग्रन्थ से जरूर लाभ उठावें। इस ग्रन्थ में प्रातः स्मरण से लेकर महागणपति क्रम, तर्पण, आवरण पूजा, शोडषोपचार, गणेश गीता सम्पुटित, चारों वेदों का पुण्याहवाचन, कवचस्तोत्र, सहस्रनाम, द्वादश अदभुत प्रयोग सहित सम्पूर्ण विवरण दिया गया है। पूर्ण शुद्ध सुन्दर छपाई बढ़िया कागज, रंगीन चित्रों सहित मूल्य ५१) रु० डाक खर्च अलग।

पता—गर्ग प्रकाशन मन्दिर, (C) मथुरा।

श्री उच्छिष्ट गणपति साधना तन्त्र

यह ग्रन्थ रत्न उच्छिष्ट गणपति साधना के लिए अनौखा सिद्ध हुआ है। आजकल हर व्यक्ति धनवान बनना चाहता है और रोग, पीड़ा; दुख दरिद्रता, मानसिक शान्ति के लिए अनेकानेक प्रयास करता रहता है, फिर भी करता रहता है, फिर भी वह उनसे मुक्त नहीं हो पाता है। अतः आप हमारा प्रकाशित ग्रन्थ रत्न खरीदें और लाभ उठायें। इस ग्रन्थ रत्न में उच्छिष्ट गणपति का पूर्ण क्रम प्रदर्शित किया है इसका शोधन आधुनिक पद्धति से किया है।

सुन्दर छपाई, बढ़िया कागज रंगीन चित्रों सहित मूल्य २०) डाक खर्च अलग।

पता—गर्ग प्रकाशन मन्दिर, (C) मथुरा।

ॐ

रुद्राक्ष महात्म्य

★

सर्वाश्रमाणां वर्णानां रुद्राक्षाणां च धारणम्
कर्तव्यं मंत्रतः प्रोक्तं द्विजान्नी नान्यवर्णिनाम्।

सब आश्रम और वर्णो को रुद्राक्ष धारण करना चाहिए। द्विज ब्राह्मण को चाहिए कि वह रुद्राक्ष को मन्त्र पूर्वक धारण करे अन्यथा नहीं।

रुद्राक्षधारणद्रुद्रो भवत्येव न संशयः।

रुद्राक्ष धारण करने से वह निःसंदेह रुद्र हो हो जाता है।

पष्यन्नपि निषिद्धांश्च यथा श्रृण्वन्नपि स्मरन,
जिघ्रान्नपि तथा चाश्नन्प्रलपन्नपि संततम्।
कुर्वन्नापि सदा गच्छन्वि सृजन्नपि मानवः,
रुद्राक्षधारणदेव सर्वपापैर्न लिप्यते।

निषिद्धों को देखता, सुनता, स्मरण करता हुआ, सूँघता, खाता, प्रलाप करता, गमन और विसर्जन में इन निषिद्ध कर्मो को करता हुआ रुद्राक्ष धारण करने वाले को पाप नहीं लगता।

अनेनं भुक्तं देवेन् भुक्तं यन्तु तथा भवेत,
पीतं रुद्रेण तत्पीतं घ्रातं घ्रातं शिवेन तत्।

इसका भोजन किया हुआ देवताओं के भोजन करने के

समान है। जो उसने पीया सो रुद्र ने पान किया, जो उसने सूँघा सो स्वयं शिव ने सूँघा।

रुद्राक्षधारणे लज्जा येषामस्ति महामुने,
तेषां नास्ति विनर्मोक्षः संसाराजन्मकोटिभिः।

हे महामुने ! जिसको रुद्राक्ष धारण करने में लज्जा आती है उसका संसार से करोड़ जन्म में भी निस्तार नहीं होता।

रुद्राक्षधारिणं दृष्ट्वा परिवादं करोति यः,
उत्पत्तौ तस्य सांकर्यमस्त्येवेति विनिश्चयः।

रुद्राक्षधारी को देखकर जो निन्दा और विवाद आदि करता है उसकी उत्पत्ति में निश्चय ही संकरता है।

रुद्राक्षधारणदेव रुद्रो रुद्रत्वामाप्नुयात्,
मुनयः सत्यसंकल्पा ब्रह्मा ब्रह्मत्व मागतः।

रुद्राक्ष धारण करने से ही रुद्र भी रुद्रत्व को प्राप्त होते हैं मुनि सत्य-संकल्प को प्राप्त करते हैं और ब्रह्मा भी ब्रह्मत्व को प्राप्त हुए।

रुद्राक्षधारणा च श्रेष्ठं न किंचिदपि विद्यते।

रुद्राक्ष धारण करने से कोई वस्तु श्रेष्ठ नहीं है।

रुद्राक्षधारिणे भक्त्या वस्त्रं धान्यं ददातियः,
सर्वपाप विनिर्मुक्तः शिवलोकं स गच्छति।
रुद्राक्षधारिणं श्राद्धे भोजयेत विमोदतः,
पितृलोकमवाप्नोति नात्रं कार्या विचारणा।

रुद्राक्षधारी के निमित्त जो वस्त्र और धन्य-धान्य देता है। वह सब पापों से मुक्त होकर शिवलोक को जाता है। जो रुद्राक्षधारी को प्रसन्नता से भोजन कराता है वह पितृलोक को प्राप्त होता है, उसके कर्म नहीं देखे जाते।

रुद्राक्षधारणः पादौ प्रक्षाल्यादिभिः पिबेन्नरः,
सर्वपापविर्निमुक्तः शिवलोके महीयते ।

जो पुरुष रुद्राक्ष धारण किये हुए व्यक्ति के चरण धोकर जलपान करे तो वह सर्वपाप मुक्त होकर शिवलोक में पहुंचता है ।

हारं वा कटकं वापि सुवर्णं वा द्विजोतम्,
रुद्राक्षसहितं भक्तया धारंयनरुद्रतामियात ।

जो ब्राह्मण हार, कंटक या सुवर्ण को रुद्राक्ष के सहित धारण करता है, वह रुद्रता को प्राप्त होता है ।

रुद्राक्षं केवलं वापि यत्र कुत्र महामते,
समंत्रकं वा मन्त्रेण रहितं भाववर्जितम् ।
यो वा को नरो भक्तयाः धारयेलज्जयापि वा,
सर्वपाप विनिमुक्तः सम्यज्ञानभवापनुयात् ॥.

केवल रुद्राक्ष को भी जहाँ कहीं मन्त्र से या बिना मन्त्र के ही, भाव से या विना भाव के ही जो कोई व्यक्ति भक्ति से या लज्जा से भी धारण करता है वह सब पापों से रहित हो भली प्रकार से ज्ञान को प्राप्त करता है ।

अहो रुद्राक्षमाहात्म्यं मया वक्तुं न शक्यते ।
तत्मात्सर्वप्रयत्नेन कुर्याद्रुद्राक्ष धारणम् ॥

अहो, मैं रुद्राक्ष महात्म्य नहीं कह सकता । अतः सब प्रकार से प्रयत्न करके रुद्राक्ष धारण करना चाहिए ।



रुद्राक्ष की उत्पत्ति



नारद उवाच

एवंभूतानुभावोऽयं रुद्राक्षो भवताऽनघ,
वर्णितो महतां पूज्यः कारणं तत्र किं वद ।

नारद जी बोले—हे अनघ ! जब रुद्राक्ष का इस प्रकार का प्रभाव है और महान पुरुषों से पूजित है तो इसका कारण क्या है ? ये आप कहिए ।

नारद उवाच

एवमेव पुरा पृष्टो भगवान गिरीशः प्रभुः,
षण्मुखेन च रुद्रस्तं यदुवाच शृणुत्व तत ।

नारद जी बोले—यही बात पहले भगवान् गिरीश से षण्मुख ने पूछी थी सो इस पर रुद्र ने जो कहा वह सुनो—

ईश्वरी उवाच

शृणु षण्मुख तत्वेन कथयामि समासतः,
त्रिपुरो नाम दैत्यस्तु पुराऽसीतसर्वदुर्जयः ।

ईश्वर बोले—हे षण्मुख ! तत्पूर्वक सुनो, मैं संक्षेप से कहता हूँ । त्रिपुर नाम का एक दैत्य बड़ा ही दुर्जय हो गया था ।

हतास्तेन सुराः सर्वे ब्रह्मविष्णवादि देवताः
सर्वेस्तु कथिते तस्मि स्तदाह त्रिपुरं प्रति ।

अंचितयं महाशस्त्रमघोराख्यं मनोहरम्,
सर्वदेवमयं दिव्यं ज्वलंतम् घोररूपि यत् ॥
त्रिपुरस्थ वधार्थाय देवानां तारणाय च,
सर्वविघ्नोपशमनमघोरास्तमंचितयम् ।

उसने ब्रह्मा, विष्णु आदि सब देवताओं को तिरस्कृत कर दिया तो सब ने त्रिपुर की बात मुझ से आकर कही तब मैंने इस त्रिपुर के बध करने, देवताओं की रक्षा करने और सर्व विघ्न के विनाश के निमित्त सर्वदेवमय दिव्य और ज्वलंत महाघोर रूपी, अघोर अस्त्र का चिन्तन किया ।

दिव्यवर्षसहस्र' तु चक्षुरुन्मीलितं मया,
पश्चान्माकुलाक्षिभ्यः पतिता जलबिन्दवः ।

तब दिव्य सहस्र वर्ष तक मैंने अपने नेत्र निमीलित किए तो मेरे नेत्रों से जलबिन्दु गिरे ।

तत्रश्रुबिन्दतो जाता महारुद्राक्ष वृक्षकाः,
ममाज्ञया महासेन सर्वेषां हितकाम्यया ।

उन नेत्रों से गिरे हुए अश्रु बिन्दुओं से महारुद्राक्ष के वृक्ष उत्पन्न हुए । हे महासेन ! मेरी आज्ञा से और सबके हित की कामना से वे रुद्राक्ष पैदा हुए ।

रुद्राक्ष के भेद



बभूवुस्ते च रुद्राक्षा अष्टत्रिंशत्प्रभेदतः,
सूर्यनेत्र समुद्भूता कपिला द्वादशस्मृताः ।

वे अट्ठाइस प्रकार के भेद वाले हुए । सूर्य नेत्र से उत्पन्न कपिलवर्ण के बाहर उत्पन्न हुए ।

सोमनेत्रोस्थिताः श्वेतास्ते षोडषविधाः क्रमात्,
वह्निनेत्रोद्भवाः कृष्णा दश भेदा भवंति हि ।
श्वेतवर्णश्च रुद्राक्षो जातितो ब्राह्म उच्यते,
क्षात्रो रक्तस्तथा मिश्रो वैश्याः कृष्णस्तु शूद्रकः ।।

सोमनेत्र से उत्पन्न हुए श्वेत वर्ण के सोलह प्रकार के हैं । वह्निनेत्र से उत्पन्न कृष्ण वर्ण के दस प्रकार के हैं । श्वेतवर्ण का रुद्राक्ष जाति से ब्राह्मण कहलाता है । रक्तवर्ण का रुद्राक्ष क्षत्रिय, मिश्रित वर्ण का रुद्राक्ष वैश्य और कृष्णवर्ण का रुद्राक्ष शूद्र है ।

रुद्राक्ष के चौदह प्रकार के नाम और उनकी महिमा

9.

एकवत्र शिवः साक्षातब्रह्महत्यां व्यपोहति ।

एकमुखी रुद्राक्ष साक्षात् शिव है. और ब्रह्म हत्या को दूर करता है ।

२.

द्विवक्त्रो देव देव्यौस्या द्विविधं नाशयेदघम् ।

दोमुखी रुद्राक्ष देवी और देवता स्वरूप हैं, अनेक पाप दूर करता है।

३.

त्रिवक्त्रस्त्वनलः साक्षात्स्त्रीहत्यां दहति क्षणात् ।

तीनमुखी रुद्राक्ष साक्षात् अनल है। स्त्री हत्या का पाप क्षण भर में दूर करता है।

४.

चतुर्वक्त्रः स्वयं ब्रह्मा नरहत्याँ व्यपोहति ।

चतुर्मुखी रुद्राक्ष स्वयं ब्रह्मा का रूप है जो नर हत्या दूर करता है।

५.

पञ्चवक्त्रः स्वयं रुद्रः कालाग्निनमि नामतः
अभक्ष्यभक्षणोद्‌भूतैरगम्यागमनोद्‌भवैः
मुच्यते सर्वपापैस्तु पंचवक्त्रस्य धारणात् ।

पंचमुंखी रुद्राक्ष स्वयं रुद्र कालाग्नि नामक है। यह अभक्ष्याभक्ष्य और अगम्यागमन के अपराध से मुक्त करता है।

और भी सब प्रकार के पाप पांचमुखी रुद्राक्ष के धारण करने से दूर होते हैं।

६.

षडवक्त्रः कार्तिकेयस्तु स धार्यो दक्षिणे करे
ब्रह्महत्याभिः पापैर्मुच्यते नात्र संशयः।

छःमुखी वाले रुद्राक्ष साक्षात कार्तिकेय हैं। इनको दक्षिण हाथ में धारण करना चाहिए। ऐसा करने से ब्रह्महत्या से छूट जाता है इसमें सन्देह नहीं है।

७.

सप्तवक्त्रो महाभागो ह्यनंगो नाम नामतः,
तद्धारणन्मुच्यते हि स्वर्णस्तेयादि पातकैः।

सातमुखी रुद्राक्ष अनंग नामक है, ये महाभाग है। इसके धारण से स्वर्ण की चोरी आदि के पाप से मुक्ति होती है।

८.

अष्टवक्त्रो महासेनः साक्षाद्देवो विनायकः,
अन्नकूटं तूलकूटं स्वर्णकूटं तथैव च।
दुष्टान्वयस्त्रियं वाथ संस्पृशश्च गुरुस्त्रियम्,
एवंमादीन् पापानि हंति सर्वाणि धारणात्॥
विघ्नास्तस्य प्रणश्यंति याति चांते परम् पदम्,
भवंस्येते गुणा सर्वे ह्यष्टवक्त्रस्य धारणात।

हे महासेन ! अष्टमुखी रुद्राक्ष साक्षात् गणेश जी का स्वरूप है। अन्नकूट, तुलाकूट, स्वर्णकूट, दुष्टवंशी स्त्री और गुरु स्त्री का स्पर्श इत्यादि पाप इसके धारण से दूर होते हैं। इसके धारण से और पाप भी नष्ट होते हैं तथा अन्त में परमपद मिलता है। यह सब अष्टमुखी के धारण करने से प्राप्त होते हैं।

९.

नववक्त्रो भैरवस्तु धारयेद्वामबाहुके,
भुक्तिमुक्ति प्रदः प्रोक्तो मम तुल्यबलो भवेत्
भ्रूणहत्यासहस्राणि ब्रह्महत्या शतानि च
सद्यः प्रलयमायांति नववक्त्रस्य धारणात् ॥

नौमुखी वाले रुद्राक्ष का नाम भैरव है। इसे बाईं भुजा में धारण करना चाहिए। इसे धारण करने वाले को भुक्ति-मुक्ति की प्राप्ति होती है और उसका बल मेरे तुल्य हो जाता है। हजारों भ्रूणहत्या (गर्भहत्या) और सैकड़ों ब्रह्महत्या नौमुखी रुद्राक्ष के धारण करने से शीघ्र ही नाश हो जाती हैं।

१०.

दशवक्त्रस्तु देवेशः साक्षाद्देवो जनार्दन।
ग्रहश्चैत पिशाचाश्च वेताला ब्रह्मराक्षसाः।
पन्नगाश्चोपशाम्यंति'दशंवक्त्रस्य धारणात् ॥

दशमुखी रुद्राक्ष जनार्दन अर्थात् विष्णु का स्वरूप है। ग्रह, पिशाच, बेताल, ब्रह्मराक्षस, पन्नगादि सब दशमुख

रुद्राक्ष से शान्त हो जाते हैं अर्थात् इसके धारण करने वाले मनुष्य के सब ग्रह शांत रहते हैं उसे किसी काम का भय नहीं रहता ।

११.

वक्त्रैकादश रुद्राक्षो रुद्रैकादशकं स्मृतम्,
शिखायां धारयेद्यो वै तस्य पुण्यफलं शृणु ।
अश्वमेध सहस्रस्य वाजपेयशतस्य च,
गवाँ शतसहस्रस्य सम्यग्दत्तस्य यत्फलम् ।
तत्फलं लभते शीघ्रं वक्त्रैकादशधारणात् ॥

ग्यारहमुख वाला रुद्राक्ष साक्षात रुद्र है। जो इसे शिखा में धारण करता है उसके पुण्य फल को सुनो—एक हजार अश्वमेध यज्ञ, एक सौ वाजपेय यज्ञ और सौ हजार गोदान का जो फल है वह एकादशमुखी रुद्राक्ष के धारण करने वाले को शीघ्र मिलता है ।

१२.

द्वादशास्यस्य रुद्राक्षास्यैव कर्णे तु धारणात्,
आदित्यास्तोषिता नित्यं द्वादशास्ये व्यवस्थिताः ।
गोमेधे चाश्वमेधे च यत्फलं तदवाप्नुयात्,
शृंगिणां शास्त्रिणां चैव व्याघ्रादिनां भयं नहि ।
न च व्यधिभयंतस्य नैव चाधि प्रकीर्तितः,
न च किंचित्भयंतस्य न च व्याधि प्रवर्तते ।
न कुतश्चितभयं तस्य सुखी चैवेश्वरो भवेत्,
हस्त्यश्वमृगमार्जारसर्पमूषकदर्दुरात् ।

खरांश्चश्व शृगालांश्च हत्वा बहुविधानपि,
मुच्यते नात्र सन्देहो वक्त्रद्वादश धारणात् ।

द्वादशमुखी (बारह मुख वाला) रुद्राक्ष कर्ण में धारण करे तो उससे बारहों आदित्य प्रसन्न होते हैं । गोमेध और अश्व-मेध का फल प्राप्त होता है । उसे सींग वाले, शस्त्रधारी और व्याघ्र आदि का भय नहीं होता, उसको आधि-व्याधि का भी भय नहीं रहता । न उसे कोई भय और न व्याधि होती है अपितु सर्वत्र सुख होता है तथा अधिपति बनता है । हाथी, अश्व, मृग, मार्जार, मूषक, दर्दुर, खर, कुत्ते, श्रृगाल आदि बहुतेरे जीवों को मारकर भी द्वादशमुखी रुद्राक्ष से उसका पाप छूट जाता है ।

१३.

वक्त्रत्रयोदशो वत्स रुद्राक्षो यदि लभ्यते,
कार्तिकेय समोज्ञेयः सर्वकामार्थ सिद्धिदः ।
रसो रसायनं चैव तस्य सर्वं प्रसिद्ध्यति,
तस्यैव सर्वभोग्यानि नात्र कार्या विचारणा ।
मातरं पितरं चैव भ्रातरं वा निहन्ति यः,
मुच्यते सर्व पापेभ्यो धारणातस्य षण्मुख ।

हे षण्मुख ! यदि तेरहमुखी रुद्राक्ष प्राप्त हो जाय तब वह कार्तिकेय के समान सब अर्थ और कामना देने वाला होता है । उसको रस-रसायन सब सिद्ध होते हैं, उसको सबके-सब भोग प्राप्त होते हैं । इसमें विचार की आवश्यकता नहीं कि जो माता-पिता व भाई को भी मारता है वह उसके धारण से उस पाप से छुटकारा पा जाता है ।

१४.

चतुर्दशास्यो रुद्राक्षो यदि लभ्येत पुत्रक,
धारयेत्स ततं मूर्ध्नि तस्य पिंड शिवस्यतु।

हे पुत्र ! यदि चौदहमुख वाला रुद्राक्ष मिल जाय तो उसे सिर पर धारण करने से मनुष्य शिव के शरीर के स्वरूप होता है।

किं मुने बहुनोक्तेन वर्णनेन पुनः पुनः,
पूज्यते सततं देवैः प्राप्यते च परा गतिः।
रुद्राक्ष एकः शिरसा धार्यो भक्तया द्विजोत्तमैः।

हे मुने ! बारम्बार वर्णन करने से क्या है, एक ही रुद्राक्ष सिर पर भक्ति से धारण से वह भक्त देवताओं से पूजित होकर परमगति को प्राप्त होता है।

कितने दानों की माला किस अंग पर धारण करें ?

षड्विंशद्भिः शिरोमाला पंचाशद्धृदयेनतु-
कलाक्षैर्बाहुवलये अर्काक्षैर्मणि बंधनम्।
अष्टोत्तरशतेनापि पंचाशाद्भिः षडानन-
अथवा सप्तविंशत्या कृत्वा रुद्राक्ष मालिकाम्,
धारणाद्वा जपाद्वापिह्यनंतफलमश्नुतेसे ।

हे षडानन ! छब्बीस की माला सिर पर, पचास की हृदय में, सोलह की बाहु में और बारह को मणिबन्ध में और एक सौ आठ, पचास अथवा सत्ताइस दाने की रुद्राक्ष माला धारण करने या जपने से अनन्त फल होता है।

अष्टोत्तरशतैर्माला रुद्राक्षैधार्यंते यदि,
क्षणेक्षणे अश्वमेधस्य कलं प्राप्नोति षण्मुख,
त्रिःसप्तकुलमुद्धत्य शिवलोके महीयते ।

हे षण्मुख ! जो एक सौ आठ रुद्राक्ष की माला धारण करते हैं उनको क्षण-क्षण में अश्वमेध का फल प्राप्त होता है तथा वह अपने इक्कीस कुलों का उद्धार कर शिवलोक में प्रतिष्ठा प्राप्त करता है ।

रुद्राक्ष जपमाला के लक्षण और महात्म्य



ईश्वर उवाच

लक्षणं जपमालायः शृणुवक्ष्यामि षण्मुख,
रुद्राक्षस्य मुखं ब्रह्मा बिंदू रुद्र इतीरितः ।

ईश्वर बोले—हे षण्मुख, जपमाला का लक्षण सुनो, मैं कहता हूं—रुद्राक्ष का मुख ब्रह्मा और बिन्दु रुद्र है ।

विष्णुः पुच्छं भवैच्चैव भोगमोक्षफलप्रदम्,
पंचविंशतिभिश्धाक्षे पंचवक्त्रैः संकटकैः ।।
रक्तवर्णैः सितेर्भिश्रैः कृतरन्ध्रविदर्भितः,
अज्ञसूत्रं प्रकंतव्यं गोपुच्छवलयाकृति ।

विष्णु पुच्छ है, जो भोग और मोक्ष को देने वाला है । पच्चीस रुद्राक्ष की पंचमुखी कंटक माला जो लाल श्वेत वर्णों से मिश्रित रन्ध्र द्वारा ग्रन्थित हो तो गोपुच्छ के आकार के समान वढ़ाके माला निर्मित करनी चाहिये ।

वक्त्रं वक्त्रेण संयोज्य पुच्छेन योजयेत्,
मेरुमूर्ध्वंमुखं कुर्यात्दूर्ध्वं नागपाशकम्,
एवं संग्रथितां मालां मन्त्रसिद्धि प्रदायिनीम् ।

मुख से मुख और पुच्छ से पुच्छ संयुक्त करे, मेरू को ऊर्ध्वमुख करे, उसके ऊपर नागपाश धारण करे । इस प्रकार से ग्रथित की गई गोपुच्छ माला सब सिद्धि देने वाली होती है ।

प्रज्ञास्य गंधतोयेन पंचगव्येन चोपरि,
ततः शिवांभसाऽक्षाल्य ततो मन्त्रगणान्नयसेत ।

स्पृष्ट्वा शिवास्त्रमन्त्रेण कवचेनावगुंठयेत:,
मूलमन्त्रं न्यसेत्पश्चापूर्ववत्कारयेत्तथा ।

फिर शुद्ध जल से प्रक्षालन करके मन्त्र समूहों का न्यास करे तथा शिवास्त्र मंत्र से जो षडंग में है स्पर्श कर कवच मन्त्र हुम् से संयुक्त करे। फिर मूलमंत्र से न्यास करे, ये स्वयं पूर्वोक्त प्रकार से करे या गुरु से कराये।

सद्योजातादिभि: प्रोक्ष्य यावदष्टत्तर शतम्
मूलमन्त्र समुच्चार्य शुद्धभूमौ निधाय च ।
तस्योपरि न्यसेत्सांबं शिवं परमकारणम्,
प्रतिष्ठिता भवेन्माला सर्वकामफल प्रदा ।

सद्योजातादि मन्त्रों के शोधित एक सौ आठ मूलमन्त्र को उच्चारण करके शुद्ध भूमि में रख, उनके ऊपर साम्बशिव शंकर का न्यास करे। इस प्रकार से प्रतिष्ठित माला सब कामनाओं और फल को देने वाली होती है।

यस्य देवस्य यो मन्त्रस्तां तेनैवाभिपूजयेत्,
मूर्द्धिन कंठेऽथवा कर्णेन्यसेद्वा जपमालिकाम् ।
रुद्राक्ष मालाया चैवं जप्तव्यं नियतात्मना,
कंठे मूर्द्धिन हृदि प्रांते कर्णे बाहुयुगेऽथवा,
रुद्राक्ष धारणं नित्यं भक्त्या परमयायुतः ।

जिस देवता का जो मन्त्र है इसको उसी से पूजन करे। (अर्थात् जितने मुखवाला रुद्राक्ष है उसी के स्वरूप वाले देवता के मन्त्र से पूजन करे) मूर्द्धा, कण्ठ या हाथ में जपमाला का न्यास करे अर्थात् जप के अन्त में इन स्थानों पर धारण करले। नित्यात्मा होकर रुद्राक्ष माला से जप करना चाहिए। कण्ठ, सिर, हृदय, कान व बाहु इनमें परमभक्ति से रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।

रुद्राक्ष धारण विधि



स्कन्द उवाच

भगवञ्छ्रोतुमिच्छामि वक्त्राणां मन्त्रमुत्तमम् ।
के गुणाः स्युरमंत्रेण समन्त्रेणैव के गुणाः ॥

स्कन्द बोले हे भगवन ! मैं सुनने की इच्छा करता हूँ रुद्राक्ष धारण करने के उत्तम मंत्रों के गुणों को जो मनुष्य मंत्र सहित रुद्राक्ष को धारण करते और जो मन्त्र रहित अर्थात् वैसे ही पहन लेते हैं सो उनके गुणों को मेरे आगे आप कहो ।

शिव उवाच

रुद्राक्षस्य च माहात्म्यं वक्तुं नैवात्र शक्यते ।
अहं ते कथयिष्यामि श्रृणुत्व सुरसत्तम ॥

शिवजी बोले—कि हे सुर सत्तम ! रुद्राक्ष के महात्मय को कहने की किसी को सामर्थ्य नहीं है । मैं तेरे आगे वर्णन करता हूँ जिसको तुम सुनो ।

यः पुमान्मंत्रसंयुक्तं धारयेद्भुवि मानवः ।
रुद्रलोके वसेत्सत्यं सत्यमेतन्न संशयः ॥

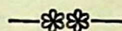
जो मनुष्य पृथ्वी पर रुद्राक्ष को मन्त्र सहित धारण करते हैं वह रुद्रलोक में जाकर वास करते हैं इसमें संशय नहीं है ।

विना मन्त्रेण यो धत्ते रुद्राक्षं भुवि मानवः ।
स याति नरके धोरे यावदिंद्राश्चतुर्दश ॥

और जो मनुष्य पृथ्वी के विषे मन्त्र रहित रुद्राक्ष को धारण करते हैं वह घोर नरक में जाकर वास करते हैं। जब तक चतुर्दश इन्द्र पृथ्वी के ऊपर वर्तमान हैं।

मंत्रानेतास्तु वक्ष्यामि श्रृणु वत्स यथाक्रमम् ।।

हे वत्स ! जिस जिस मन्त्र द्वारा मनुष्य को रुद्राक्ष धारण करना चाहिए वे मंत्र तुमसे कहता हूँ उनको तुम सुनो।



अथ एकमुखीरुद्राक्षधारणविधिः

ॐ हूँ औं एँ ॐ । इति मन्त्रः ।

अस्य श्री शिव मन्त्रस्य प्रासाद ऋषिः पंक्तिः छन्दः शिवो देवता हकारो बीजम् औं शक्तिः मम चतुर्वर्गसिद्धयर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः । वामदेव ऋषये नमः शिरसि, पंक्तिश्छन्दसे नमो मुखे ऋ एँ ऐ नमः हृदि, हूँ बीजाय नमो गुह्ये ओं शक्तये नमः पादयो ॐ ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्याँ नमः, ॐ एँ ह्री तर्जनीभ्यांस्वाहा, ॐ ह्रीं ह्रू मध्यमाभ्याँ वषट् ॐ आं ह्रै अनामिकाभ्यां हुं, ॐ ऐं ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् ॐ उँ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् इति करन्यासः ।। अथाङ्गन्यास) ॐ ॐ ह्रां हृदयाय नमः । ॐ ऐं ह्रीं शिरसे स्वाहा । ॐ ह्रै ह्रू शिखाये वषट् । ॐ औं ह्रैं कवचाय हुं । ॐ ऐं ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ ॐ ह्रः अस्त्राय फट् ।। (अथ ध्यानम्) मुक्तापीनपयोदमौक्तिकजपावर्णैर्मुखैः पञ्जभिस्त्र्यक्षैराजितमीशमिन्दुमुकुटं पूर्णेन्दुकोटिप्रभम् ।। शूलं टंककृपाणवज्रदहनान्नागेन्द्रघंटाशुकं हस्ताब्जेष्वभयवंरांश्चदधतं तेजोज्ज्वलं चिन्तये ।।१।। एवं ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य कुर्याज्जपसहस्रकं तदनन्तरमाभिमुख्यसामीप्यं घटोपरि ताम्रपात्रं निधाय तत्र रुद्राक्षं क्षिप्तवा पंक्तिप्राणायायं कृत्वा । पश्चात् वामे जलपात्रं धृत्वा जत्र तले सव्यहस्तं धृत्वा दक्षिणपाणिना सहस्रजपं कुर्यात् । पुनस्तस्योपरि जलं क्षिपेत् रुद्राक्षं धारतेत् । एवं सर्वत्र विधिर्ज्ञेयः ।। इति एक मुखी० ।।

अथ द्विमुखीरुद्राक्षधारणविधिः

ॐ क्षीं ह्रीं क्षौं व्रीं ॐ । इति मन्त्रः ।

अस्य श्रीदेवदेवेशमन्त्रस्य अत्रिऋषि गायत्री छन्दः देवदेवेशो देवता क्षीं वीजं क्षौं शक्तिः मम चतुर्वर्गसिद्धयर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः । अत्रिऋषये नमः शिरसि । गायत्री छन्दसे नमो मुखेदेवदेवशाय नमो हृदि । क्षीं बीजाय नमो गुह्ये । क्षौं शक्तये नमः पादयोः (करन्यास) ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः ॐ क्षौं तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ ह्रीं मध्यमाभ्यां वषट्, ॐ क्षां अनामिकाभ्यां हुं ॐ क्षीं कनिष्ठकाभ्यां वौषट् ॐ ॐ करतल-करपृष्ठाभ्यां फट् (अथाङ्गन्यास) ॐ ॐ हृदयाय नमः । ॐ क्षीं शिरसे स्वाहा । ॐ ह्रीं शिखायै वषट् । ॐ क्षीं कवचाय हुं । ॐ व्रीं ॐ नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ ॐ उँ अस्त्राय फट् ।।(अथ ध्यानम्) तपनसोमहुताशनलोचनं घनसमानगलं शशिसुप्रभम् । अभय चक्रपिनाकवरान्करैदेधतमिन्दधरं गिरिशं भजेत् ।।२।।

।। इति द्विमुखी० ।।

अथ त्रिमुखीरुद्राक्षधारणविधिः

ॐ रँ इँ ह्रीं ह्रूँ ओं। इति मन्त्रः।

अस्य श्री अग्निमन्त्रस्य वसिष्ठज ऋषिः। गायत्री छन्दः। अग्निदेवता ह्रीं बीजं ह्रूं शक्ति चतुर्वर्गसिध्यर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः। वसिष्ठजऋषये नमः शिरसि। गायत्रीछन्दसे नमोमुखे अग्निदेवतायै नमो हृदि। ह्रीं बीजाय नमो गुह्ये। हूँ शक्तये नमः पादयोः ।। (अथकरन्यासः) ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ रं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ इं मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ ह्रीं अनामिकाभ्यां हुं। ॐ ह्रूं कनिष्ठकाभ्यां वौषट् ॐ ॐ करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। (अथाङ्गन्यासः) ॐ ॐ हृदयाय नमः ॐ रँ शिरसे स्वाहा। ॐ शिखायै वषट्। ॐ ह्रीं कवचाय हूँ। ॐ ह्रूं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ॐ अस्त्राय फट्। (अथ ध्यानम्) अष्टशक्ति स्वस्तिकामातिमुच्चैर्दीर्घैरेभिर्धारयतं जपाभम्। हेमाकल्पं पद्मसंस्थं त्रिनेत्रं ध्यायेद्वह्निं बद्धमौलिं जटाभिः ।।३।। इति त्रिमुखी०।

अथ चतुर्मुखीरुद्राक्षधारणविधिः

ॐ वां क्रां तां ह्रां ईं । इति मन्त्रः ।

अस्य श्रीब्रह्मामन्त्रस्य भार्गवऋषिः अनुष्टुप्छन्दः ब्रह्मा देवता वां बीजं क्रां शक्तिः अभीष्टसिद्धयर्थे रुद्राक्षधारणर्थे जपे विनियोगः । भार्गवऋषये नमः शिरसि । अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे । ब्रह्मादेवतायै नमो हृदि । वां बीजाय नमो गुह्ये । क्रां शक्तये नमः पादयोः ।। (अथकरन्यासः) ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ वां तर्जनीभ्यां स्वाहा ॐ क्रां मध्यमाभ्यां वषट् । ॐ तां अनामिकाभ्यां हूं । ॐ ह्रां कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् । ॐ ईं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् । (अथाङ्गन्यासः) ॐ ॐ हृदयायनमः । ॐ वां शिरसे स्वाहा । ॐ क्रां शिखायै वषट् । ॐ तां कवचाय हूं । ॐ ह्रां नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ ईं अस्त्राय फट् । (अथ ध्यानम्) प्रणम्य शिरसा शश्वदष्टवक्त्रं चतुर्मुखम् । गायत्री सहितं देवं नमामि विधिमीश्वरम् ।।४।। इति चतुर्मुखी० ।

अथ पंचमुखीरुद्राक्षधारणविधिः

ॐ ह्राँ क्ष्भ्यी स्वाहा । इति मन्त्रः ।

अस्य श्रीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः । गायत्री छन्दः सदाशिव-कालाग्निरुद्रो देवता ॐ वीजं स्त्रार-हा शक्तिः अभीष्टसिद्धयथ रुद्राक्षधाराणार्थे जपे विनियोगः । ब्रह्मऋषये नमः शिरसि । गायत्रीछन्दसे नमो मुखे । श्रीसदाशिवकालाग्निरुद्रदेवतायै नमो हृदि । ॐ बीजाय नमो गुह्ये । स्वाहा शक्तये नमः पादयोः ।। (अथ करन्यास ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ ह्राँ तर्जनीभ्यां स्वाहा । ॐ आं मध्यमाभ्यां वषट् ॐ क्ष्म्यौं अनामिकाभ्यां हुं । ॐ स्वाहा कनिष्ठकाभ्यां वौषट् ॐ ह्रां आं क्ष्म्यौं स्वाहा, करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ।। (अथाङ्गन्यासः) ॐ ॐ हृदयाय नमः । ॐ ह्रां शिरसे स्वाहा । ॐ आं शिखायै वषट् । ॐ क्ष्म्यौं कवचाय हुं । ॐ स्वाहा नेत्रत्रयाय वौषट् ॐ ह्रां आं क्ष्म्यौं स्वाहा अस्त्राय फट् (अथ ध्यानम्) हावभावविलासार्द्धनारिकं भीषथार्धमथवा महेश्वरम् । दाशसोत्पालकपालशूलिनं चिन्तये जपविधौ विभूतये ।।५।। इति पञ्चमुखी० ।

अथ षण्मुखीरुद्राक्षधारणविधिः

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सौं ऐं। इति मन्त्रः।

अस्य श्रीमन्त्रस्य दक्षिणा मूर्त्ति ऋषिः पंक्तिछन्दः कार्तिकेयदेवताऐं बीजं सों शक्तिः क्लीं कीलकं अभीष्ट सिद्धयर्थे रुद्राक्ष धारणार्थे जपे विनियोगः दक्षिण मूर्त्तिऋषयेनमः शिरसि पंक्तिच्छन्दसे नमो मुखे । कार्तिकेयदेवतायै नमो हृदय ऐं बीजाय नमो गुह्ये । सौं शक्तये नमः पादयोः (अथ करन्यासः) ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा ॐ श्री मध्यामाभ्यां वषट्। ॐ क्लीं अनामिकाभ्यां हुं। ॐ सौं कनिष्ठकाभ्यां वौषट्। ॐ ऐं करतलकर पृष्ठाभ्यां फट्। (अथाङ्गन्यासः) ॐ ॐ हृदयाय नमः ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ श्रीं शिखायै वषट्। क्लीं कवचाय हुं। ॐ सौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ऐं अस्त्राय फट् (अथ ध्यानम्) क्रौंचपर्वतविदारणचोलो दानवेन्द्रवर्निताकृतलण्डः। चूतपल्लवशिरोमणिचोदी भोष्यडानन जगत्परिपाहि ॥६॥ इति षण्मुखीं०।

अथ सप्तमुखीरुद्राक्षधारणविधिः

ॐ ह्रं क्रीं ह्री सौं। इति मन्त्रः

अस्य श्रीअनन्त मन्त्रस्य भगवान् ऋषिः गायत्री छन्दः अनन्तो देवता क्रीं बीजं ह्रीं शक्ति अभीष्ट सिद्धयर्थे रुद्राक्ष धारणार्थे जपे विनियोगः। भगवान् ऋषये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमो मुखे। अनन्त देवतायै नमो हृदि। क्रीं बीजाय नमो गुह्ये। ह्रीं शक्तये नमः पादयोः (अथ करन्यासः) ॐ ॐ अँगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ क्रीं मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ ग्लौं अनामिकाभ्यां हुं, ॐ ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ॐ स्रौं करतलकर पृष्ठाभ्यां फट्। (अथाङ्गन्यास) ॐ ॐ हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ क्रीं शिखायै वषट्। ॐ ग्लौं कवचाय हुं। ॐ ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ स्रौं अस्त्राय फट्। (अथ ध्यानम्) अनन्त पुंडरीकाक्षं फणाशतविभूषितम्। त्रिष्वबन्धूक आकारं, कुर्मारूढं प्रपूजयेत्।

॥ इति सप्तमुखी० ॥

अथ अष्टमुखीरुद्राक्षधारणविधि

ॐ ह्लां ग्रीं लं आं श्रीं । इति मन्त्रः ।

अस्य श्रीगणेशमन्त्रस्य भार्गवऋषिः अनुष्टुप्छन्दः विनायको देवता ग्रीं बीजं आं शक्तिः चतुर्वर्गसिद्धयर्थं रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः । भार्गव ऋषये नमः शिरसि । अनुष्टप्छन्दसे नमो मुखे । विनायक देवतायै नमो हृदि । ग्रीं बीजाय नमो गुह्ये । आं शक्तये नमः पादयोः । (अथ करन्यासः) ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ ह्लां तर्जनीभ्यां स्वाहा । ॐ ग्रीं मध्यमाभ्यां वषट् । ॐ ॐ अनामिकाभ्यां हुं । ॐ आं कनिष्ठकाभ्यां वौषट् । ॐ श्रीं करतरकरपृष्ठाभ्यां फट् । (अथाङ्गन्यासः) ॐ ॐ हृदयाय नमः ॐ ह्लां शिरसे स्वाहा ॐ ग्रीं शिखायै वषट् ॐ लं कवचाय हुं, ॐ आं नेत्रत्रयाय वौषट् ॐ श्रीं अस्त्राय फट् । (अथ ध्यानम्) हरतु कुल गणेशो । विघ्नसघानशेषान् नयतु सकलसम्पूर्णतां साधकानाम् । पिवतु बटुकनाथः शोणितं निन्दकानां दिशतु सकलकामना कौलिकानां गणेशः ।। इति अष्ट मुखी० ।।

अथ नवमुखीरुद्राक्षधारणविधिः

ॐ ह्रीं वँ यँ रँ लँ। इति मन्त्रः।

अस्य श्रीभैरवमन्त्रस्य नारदऋषिः गायत्री छन्दः भैरव देवता वं बीजं ह्रीं शक्तिः अभीष्टसिद्धयर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः। नारदऋषये नमः शिरसि। गायत्रीछन्दसे नमो मुखे, भैरवदेवतायै नमो हृदि। वँ बीजाय नमो गुह्ये, ह्रीं शक्तये नमः पादयोः॥ (अथकरन्यासः) ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ वँ मध्यमाभ्यां वषट्, ॐ यँ अनामिकाभ्याँ हुं, ॐ रँ कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ॐ लँ करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्। (अथाङ्गन्यासः) ॐ ॐ हृदयाय नमः, ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ वँ शिखायै वषट्, ॐ यँ कवचाय हुं। ॐ रं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ लँ अस्त्राय फट्। (अथ ध्यानम्) कपालहस्तं भुजगोपवीतं कृष्णछविंदण्डधरं त्रिनेत्रम्। अचिन्त्या-माद्यं अद्युपानमत्तं हृदि स्मरेद्भैरवमिष्टदं नृणाम्। इति नव मुखी०।

अथ दशमुखीरुद्राक्षधारणविधिः

ॐ ह्रीं क्लीं व्रीं ओम् । इति मन्त्रः ।

अस्य श्रीजनार्द्दनमन्त्रस्य नारदऋषिः अनुष्टुप्छन्दः जनार्द्दनो देवता श्रीं बीजं ह्रीं शक्तिः अभीष्टसिद्ध्यर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः । नारदऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे जनार्द्दनदेवतायै नमो हृदि, श्रींबीजाय नमो गुह्ये, ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ।। (अथ करन्यासः) ॐ ॐ अँगुष्ठाभ्यां नमः; श्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहाः ॐ ह्रीं मध्यमाभ्यां वषट् । ॐ क्लीं अनामिकाभ्यां हुं, ॐ व्रीं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ॐ ॐ करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् । (अथाङ्गन्यासः) ॐ ॐ हृदयाय नमः । ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ ह्रीं शिखायै वषट् । ॐ ह्रीं कवचाय हुं । ॐ व्रीं नेत्रत्रायाय वौषट् । ॐ ॐ अस्त्राय फट् । (अथ ध्यानम्) विष्णु शारदचन्द्र कोटिसदृशं शंखं रथांगं गदामम्भोजं दधतं सिताब्जनिलयं कांत्यां जगन्मोहनम् । आबद्धांगदहारकुण्डमहामौलिस्फुरत्कंकणं श्रीवात्सांकमृदारकौस्तुभधरंवन्दे मुनीन्द्रैस्तुतम् ।। इति दशमुखी० ।।

अथ एकादशमुखीरुद्राक्षधारणविधिः

ॐ रूं क्षूं मूं औं। इति मन्त्रः।

अस्य श्रीरुद्रमन्त्रस्य कश्यप ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः रुद्रो देवता रूं बीजं क्षूं शक्तिः अभीष्ट सिद्ध्यर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः, कश्यप ऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे, रुद्र देवतायै नमो हृदि, रूँ बीजाय नमो गुह्ये, क्षूं शक्तये नमः पादयोः। (अथ करन्यासः) ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः ॐ रूं तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ क्षूं मध्यमाभ्यां वषट्, ॐ मूं अनामिकाभ्यां हूं, ॐ यूं कनिष्ठकाभ्यां वौषट्, ॐ औं करतलकर पृष्ठाभ्यां फट्। (अथाङ्गन्यासः) ॐ ॐ हृदयाय नमः, ॐ रूँ शिरसे स्वाहा, ॐ क्षूँ शिखायै वषट्, ॐ मूँ कवचाय हुं ॐ यूँ नेत्रत्रयाम वोषट ॐ ॐ अस्त्राय फट। (अथ ध्यानम्) वालार्कायुततेजसं धृतजटाजूटेनन्दुखण्डोज्ज्वलं नागेन्द्रैः कृतशेखरं जपवटीं शूलं कपालं करैः। खटवांगं दधतं त्रिनेत्रविलसत्पञ्चाननं सुन्दरं व्याघ्रत्वक्पारधानमब्जनिलयं श्रीनीलकण्ठं भजेत्॥ इति एकादशमुखी०।

अथ द्वादशमुखीरुद्राक्षधारणविधिः

ॐ ह्रीं क्षौं घृणिः श्रीं । इति मन्त्रः ।

अस्य श्रीसूर्यमन्त्रस्य भार्गव ऋषिः गायत्री छन्दः विश्वेश्वरो देवता ह्रीं बीज श्रीं शक्तिः घृणिः कीलकं रुद्राक्षधारणर्थे जपे विनियोगः । भार्गव ऋषये नमः शिरसि, गायत्री छन्दसे नमो मुखे विश्वेश्वरो देवतायै नमो हृदि, ह्रीं बीजाय नमो गुह्ये, श्री शक्तये नमः पादयोः ।। (अथ करन्यासः) ॐ ॐ श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः ॐ ह्रीं श्रीं तर्जनीभ्यां, स्वाहा, ॐ क्षौं श्री मध्यमाभ्यां वषट । ॐ घं श्रीं अनामिकाभ्यां हुं ॐ णिः श्रीं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट, ह्रीं क्षौ घृणिः श्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट (अथांगन्यासः) ॐ ॐ श्रीं हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा । ॐ क्षौं श्रीं शिखायै वषट ॐ ह्रं कवचाय हुं । ॐ णिं श्रीं नेत्रत्रयाय वौषट । ॐ ह्रीं क्षौं घृणिः श्रीं अस्त्राय फट । (अथ ध्यानम् शोणांभोरुहस्थितं त्रिनयनं वेदत्रयीविग्रहं दानांभोजयुगाभयानि दधतं हस्तै- प्रवालप्रभम् । केयूरांगदकंकणद्वयधरं कर्णैर्लसत्कुण्डलं लोकोत्पत्तिविनाशपालनकरं सूय गुणाघ्रि भजेत् ।। इति द्वादशमुखी० ।।

अथ त्रयोदशमुखीरुद्राक्षधारणविधिः

ॐ ईं यां आप ओं। इति मन्त्रः।

अस्य श्रीइन्द्र मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः पंक्ति छन्दः इन्द्रो देवता ईं बीजं आप इति शक्तिः रुद्राक्ष धारणार्थे जपे विनियोगः। ब्रह्मा ऋषये नमः शिरसि। पंक्तिः छन्दसे नमो मुखे। इन्द्रो देवतायै नमो हृदि। ईं बीजाय नमो गुह्ये आप इति शक्तये नमः पादयोः (अथ करन्यासः) ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ईं तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ यां मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ आप अनामिकाभ्यां हूं। ॐ ॐ कनिष्ठकाभ्यां वौषट्। ॐ ईं यां आप औं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। (अथाङ्गन्यासः) ॐ ॐ हृदयाय नमः ॐ ईं शिरसे स्वाहा। यां शिखायै वषट्। ॐ आप कवचाय हुं। ॐ ॐ नेत्रत्रैयाय वौषट्, ॐ ईं यां आप ॐ अस्त्राय फट्। (अथ ध्यानम्) पीतवर्णं सहस्राक्ष वज्रपद्मधरं विभुम्। सर्वालंकारसंयुक्तं नौमीन्द्रादिकमीश्वरम्॥

॥ इति त्रयोदशमुखी० ॥

अथ चतुर्दशमुखीरुद्राक्षधारणविधिः

ॐ औं ह्स्फ्रें खफ्रें ह्स्रौं हसख्फ्रें । इति मन्त्रः ।

अस्य श्रीहनुमन्त्रस्य रामचन्द्र ऋषि जगती छन्दः श्री हनुमद्देवता औं बीजं ह्स्फै शक्तिः अभीष्ट सिद्ध्यर्थेः जपे विनियोगः। रामचन्द्र ऋषये नमः शिरसि। जगती छन्दसे नमो मुखे। हनुमद्देवतायै नमो हृदि। औं बीजाय नमो गुह्ये। ह्स्फ्रैं शक्तये नमः पादयोः (करन्यास) ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ औं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ ह्स्फ्रें मध्यमाभ्यां वषट्, ॐ खफ्रें अनामिकाभ्यां हुं। ॐ ह्स्रौं कनिष्ठकाभ्यां वौषट्, ॐ ॐ हसख्फ्रें करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्॥ (अथाङ्गन्यास) ॐ ॐ हृदयाय नमः। ॐ शिरसे स्वाहा। ॐ ह्स्फ्रें शिखायै वषट्। ॐ खफ्रें कवचाय हुं। ॐ ह्रसस्फ्रें अस्त्राय फट्। (अथ ध्यानम्)। उद्यन्मार्तण्डकोटिप्रकटरुचियुतं चारुवीराशनस्थं मौञ्जीयज्ञोपवीताभरणरुचिशिखाशोभितं कुण्डलाभ्याम्। भक्तानामिष्टदानप्रवणमनुदिनं वेदनादप्रमोद ध्यायैद्देव विधेयं प्लवगकुलपतिं गोष्पदीभूतवार्द्धिम्।

एतैर्मन्त्रैः क्रमेणकमुखादि धारणं नमः।

इन मन्त्रों से क्रमानुसार करके एक मुखी से लेकर चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष धारण कर नमस्कार करे।

रुद्राक्ष महात्म्य पौराणिक ग्रन्थों में



किमत्र बहुनोक्तेन वर्णनेन पुनः पुनः ।
रुद्राक्षधारणं नित्यं तस्मादेतत्प्रशस्यते ।

बारम्बार कहने और बहुत वर्णन करने से क्या है, रुद्राक्ष नित्य धारण करने से प्रतिष्ठा होती है।

स्नाने दाने जपे होमे वैश्वदेवे सुरार्चने ।
प्रायश्चितये तथा श्राद्धे दीक्षाकाले विशेषतः ।
अरुद्राक्षधरो भूत्वा यत्किंचित्कर्म वैदिकम् ।
कुर्वन्विप्रस्तु मोहेन नरके पतित ध्रुवम् ॥

स्नान, दान, जप, होम, वैश्यदेव, सुरार्चन, प्रायश्चित, श्राद्ध और विशेषतः दीक्षाकाल में बिना रुद्राक्ष धारण किये जो कुछ भी वैदिक कर्म करते हैं वह मोह से नरक में जाता है।

रुद्राक्षं धारयेन्मूर्ध्नि कंठे सूत्रे करेऽथवा,
सुवर्णभणिसंभिन्नं शुद्धं न न्यैघृतं शिवम् ।
नाशुचिर्धारयेदक्षं सदा भक्त्यैव धारयेत्,
रुद्राक्षतरूसंभूतवातोद्भूतमृणान्यपि,
पुण्यलोकं गमिष्यंति पुनरावृत्तिदुर्लभम् ॥

रुद्राक्ष को सिर में, कंठ में, यज्ञोपवीत में और हाथ में धारण करे। स्वर्ण से युक्त रुद्राक्ष धारण भी शुद्ध है, और कुछ मिला

कर न धारे। अशुचि होकर रुद्राक्ष धारण न करे, सदा भक्ति से धारण करे। रुद्राक्ष के वृक्ष से लगी हुई वायु के तिनके भी पुण्य लोक को प्राप्त होते हैं जिनका पुनर्जन्म नहीं होता।

रुद्राक्षं धारयन्पापं कुर्यन्नापि च मानवः।
सर्वं तरति पाप्मानं जबालश्रुतिराह हि॥

जाबाल श्रुति कहती है कि रुद्राक्ष धारण कर पाप करते हुए भी सब पाप तर जाते हैं।

पशवो हि च रुद्राक्ष धारणाद्याति रुद्रताम्।
किमु ये धारयेतिस्म नरारुद्राक्ष मालिकाम्॥

रुद्राक्ष धारण करने से पशु भी रुद्र लोक को प्राप्त होते हैं तो फिर जो मनुष्य रुद्राक्ष की माला धारण करते हैं उनकी बात को कौन कहे !

रुद्राक्ष शिरशा ह्येको धार्यो रुद्रपरैः सदा।
ध्वंसनं सर्वदुखानां सर्वपाप विमोचनम्॥

शिव के भक्त के लिए एक रुद्राक्ष का सिर पर धारण करना सब दुःखों का ध्वंस करने वाला और सब पापों का विमोचन करने वाला होता है।

रुद्राक्षालंकृता ये च ते वै भागवतोत्तमाः।
रुद्राक्ष धारण कार्यं सर्वश्रेयोऽर्थिगिनृभिः॥

जो रुद्राक्ष से अलंकृत है वह उत्तम भागवत् है। सब कल्याण की इच्छा करने वालों को सदा रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।

कर्णपाशेशिखायां च कंठे हस्ते तथोदरे,
महादेवश्च विष्णुश्च ब्रह्मा तेषां त्रिभूतयः।
देवाश्चान्ये तथा भक्त्या खलुरद्राक्षधारिणः।
गोत्रर्षयश्च सर्वेषां कूटस्था मूलरूपिणः।:

कर्ण, शिख, कण्ठ, हाथ और उदर में महादेव, विष्णु और ब्रह्मा की विभूति हैं तथा और भी देवता भक्तिपूर्वक रुद्राक्ष धारण करते हैं। सबके गोत्र ऋषि सब कूटस्थल मूलरूपी श्रौत-धर्म में रत रुद्राक्ष के धारण करने वाले हैं।

तेषांवंशप्रसूताश्च मुनयः सकला अपि
श्रौत धर्म पराः शुद्धाः खलु रुद्राक्षधारिणः।

उन्हीं से सब मुनियों के वंश हैं। वे सब रुद्राक्षधारी श्रौत धर्म में तत्पर और शुद्ध हैं।

श्रद्धा न जायते साक्षाद्वेदसिद्धे विमुक्तिदे,
बहूनां जन्मनामंते महादेवप्रसादतः
रुद्राक्षधारणे वांछा स्वभावादेव जायते।

वेद सिद्ध रुद्राक्ष धारण में एकाएक श्रद्धा नहीं होती अपितु बहुजन्मों के अन्त में महादेव की कृपा से रुद्राक्ष धारण की स्वाभाविक इच्छा पूरी होती है।

रुद्राक्षस्य तु महात्म्यं जाबालैरादरेण तु,
पठ्यते मुनिभिः सर्वेर्मया पुत्र तथैव च,
रुद्राक्षस्य फलं चैव त्रिपु लोकेषु विश्रुतम्।

जाबालश्रुतियों में सब मुनियों द्वारा रुद्राक्ष महात्म्य आदर पूर्वक पढ़ा जाता है। हे पुत्र ! रुद्राक्ष महात्म्य तीनों लोकों में विख्यात है।

फलस्य दर्शने पुण्यं स्पर्शात्कोटिगुणं भवेत्,
शतकोटि गुणं पुण्यं धारणाल्लभते नरः।
लक्षकोटि सहस्राणि लक्षकोटिशतानि च,
जपाच्च लभते नित्यं नात्र कार्य विचारणा॥

रुद्राक्ष के दर्शन मात्र से पुण्य, स्पर्श से करोड़ गुना पुण्य और धारण करने से उससे भी सौकोटि गुना पुण्य व्यक्ति को मिलता है। लक्षकोटि और सहस्रलक्षकोटि गुना फल जप से प्राप्त होता है जिसमें कर्म का विचार नहीं किया जाता।

हस्ते चोरसि कंठे च कर्णयोर्मस्तकके तथा।
रुद्राक्षंधारयेद्यस्तु स रुद्रो नात्र संशयः॥

हाथ, हृदय, कान और मस्तक में जो रुद्राक्ष धारण करता है वह नि.सन्देह शिव है।

अवध्यः सर्वभूतानां रुद्रवद्धि चरेद्भुवि।
सुराणामसुराणामं च वंदनीयो यथा शिवः।

वह सर्व प्राणियों के वध के आयोग्य होकर भूमि में विचरण करता है और शिव के समान सुरों व असुरों से वन्दनीय होता है।

रुद्राक्षधारी सततं वंदनीयस्तथा नरैः।
उच्छिष्टो वा विकर्मस्थो युक्तो वा सर्वपातकैः।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो रुद्राक्षस्य तु धारणात्।

रुद्राक्षधारी मनुष्यों में सदा वन्दनीय होता है। नीच और न करने योग्य कर्मों को करता हो या सब पापों मे युक्त हो, तो भी रुद्राक्ष के धारण कर लेने मे सब पापों से छुटकारा पा लेता है।

कंठेरुद्राक्षमाबध्य श्वापि वा म्रियते यदि ।
सोऽपि मुक्तिमवाप्नोति किं पुनर्मानुषोऽपि सः ॥

यदि कुत्ता भी गले में रुद्राक्ष बाँधकर प्राण त्याग करे, वो भी मुक्त हो जाता है तो मनुष्य की तो बात ही क्या है !

जपध्यानविहीनोपि रुद्राक्षं यदि धारयेत्,
सर्वपाप विनिर्मुक्तः स याति परमां गतिम् ।
एक वापि हि रुद्राक्षँ कृत्वा यत्नेन धारयेत्
एकविंशतिमुद्धृत्य रुद्रलोके महीयते ॥

जप और ध्यान मे विहीन भी यदि रुद्राक्ष धारण करे तो वह सब पापों मे विमुक्त होकर परमगति को पाता है । जो एक भी रुद्राक्ष यत्नपूर्वक धारण करता है वह अपने इक्कीस कुत्तों का उद्धार करके रुद्रलोक में पहुंचता है ।

ईश्वर उवाच

महासेन कुशग्रंथिपुत्रा जीवादयः परे,
रुद्राक्षस्य तु नैकोऽपि कलामर्हति षोडशीम् ।

ईश्वर ने कहा—हे महासेन, कुशग्रन्थि, जीयापोता आदि जो और कितनी ही दूसरी वस्तुएँ हैं वह रुद्राक्ष की सोलहवीं कला को भी नहीं प्राप्त हो सकतीं ।

पुरुषाणां यथा विष्णुग्रहाणाँ च यथा रवि,
नदीनां तु यथा गंगा मुनीनाँ कश्यपो यथा ।
उच्चैः श्रवा यथाश्रवानां देवानामीश्वरो यथा,
देवीनाँ तु यथा गौरी तद्व श्रेष्ठमिदं भवेत ॥

जैसे पुरुषों में विष्णु, ग्रहों में सूर्य, नदियों में गंगा, मुनियों में कश्यप, अश्वों में उच्चैःश्रवा, देवताओं में महादेव, देवियों में गौरी हैं, इसी प्रकार से रुद्राक्ष सबसे श्रेष्ठ है ।

नातः परतरं स्तोत्रं नातः परतरं व्रतम् ।
अक्षय्येषु च दानेषु रुद्राक्षस्तु विशिण्यते ॥

सब स्तोत्र इससे परे हैं, सब व्रत इससे परे हैं। दान और नाश न होने वालों में रुद्राक्ष सबसे विशेष हैं।

शिवभक्साय शांताय दद्याद्रुद्रा क्षमुतमम्
तस्य पुण्यफल स्यांतं नचा ह वक्तुमुत्सहे ।
धृतरुद्राक्षकंठाय यस्त्वन्नं संप्रयच्छतित्रि,
सप्तकुलमुद्धृत्य रुद्रलोकं स गच्छति ॥

शिवभक्त को शान्ति के निमित्त उत्तम रुद्राक्ष देने चाहिये उसके पुण्यफल की अनन्तता को कोई नहीं कह सकता। कण्ठ में रुद्राक्ष धारण किये हुए पुरुष को जो अन्न देता है वह सात कुलों का उद्धार कर रुद्रलोक को जाता है।

वस्य भाले विभूतिर्न नांगे रुद्राक्ष धारणम् ।
शंभोर्भवने पूजा स विप्रः श्वपचाधमः ॥

जिसके मस्तक में विभूति, अंग में रुद्राक्ष नहीं और जो शिव मन्दिर में जाकर पूजा नहीं करता वह ब्राह्मण सबसे नीच है।

खादन्मासं पिवन्मद्यं संगछन्नत्यजानपि,
पातकेभ्यो विमुच्येत रुद्राक्षे शिरसे स्थिते ।
सर्वयज्ञातपोदानं वेदाभ्यासैश्च यत्फलम्,
यत्फलं लभते सद्यो रुद्राक्षस्यु तु धारणात् ॥

मांस खाते हुए, मद्य पीते हुए और अनन्त्यों का संग करते भी सिर में रुद्राक्ष धारण करने से पातकों से छूट जाता है। सब यज्ञ, तप, दान तथा वेदाभ्यास का जो फल है वह फल रुद्राक्ष के धारण करने से तत्काल मिलता है।

देवैश्चतुर्भिर्यत्पुण्यं पुराण पठेनन् च,
यत्तीर्थसेवनेनैव सर्वं विद्यादिभिस्तथा,
तत्पुण्य लभते सद्यो रुद्राक्षस्य तु धारणात् ॥

जो चारों वेद और पुराणों के पाठ का फल है, तीर्थ और सर्व प्रकार की विद्याओं का फल है वह फल शीघ्र ही रुद्राक्ष के धारण से मिलता है।

प्रयाणकाले रुद्राक्ष बंधयित्वा म्रियेद्यदि,
स रुद्रत्वमवाप्नोति पुनर्जन्म न विद्यते ।
रुद्राक्ष धारयेत्कंठे बाह्वोर्वा म्रियतेयदि,
कुलैकविंशमुत्तार्य रुद्रलोके वसेन्नरः ॥

प्रयाण के समय यदि कोई रुद्राक्ष धारण करके मर जाए तो वह फिर जन्म को प्राप्त न होकर रुद्रलोक में गमन करता है। कण्ठ और भुजा में यदि रुद्राक्ष धारण कर मृत्यु हो जाए तो इक्कीस कुल तारकर रुद्रलोक में निवास करता है।

ब्राह्मणो वापि चाण्डालो निर्गुणः सगुणोऽपि च ।
भस्मरुद्राक्षधारी यः स देवत्वं शिवं व्रजेत् ॥

ब्राह्मण या चाण्डाल, निर्गुण या सगुण कोई भी हो, भस्म रुदाक्ष धारण करने वाला शिवता को प्राप्त करता है।

शुचिर्वाप्यशुचिर्वापि तथाऽभक्षस्य भक्षकः,
म्लेच्छो वाप्यथ चाण्डालो युतो वा सर्वपातकैः,
रुद्राक्षधारणादेव स रुद्रो नात्र संशय ॥

शुचि अथवा अशुचि और अभक्ष्य का भी भक्षण करने वाला वह म्लेच्छ, चाण्डाल या सब पातकों से युक्त हो तो वह रुंद्राक्ष धारण से ही रुद्र हो जाता है। इसमें सन्देह नहीं।

शिरसा धार्यते कोटिः कर्णयोर्दशकोटयः,
शतकोटिर्गले बद्धो मूर्ध्नि कोटिसहस्रकम् ।
अयुतं चोपवीते तु लक्षकोटिर्भुजे स्थिते,
मणिबन्धे तु रुद्राक्षो मोक्षसाधनकः परः ॥

एक करोड़ गुना फल सिर पर, दस करोड़ गुना फल कान में, सौ करोड़ गुना फल गले में. हजार करोड गुना फल मूर्धा में, यज्ञोपवीत में अयुत और भुजाओं में रुद्राक्ष धारने का लाख करोड़ गुना फल होता है । मणिबन्ध में रुद्राक्ष धारण करके मोक्ष साधन में तत्पर होता है ।

रुद्राक्षधारको भूत्वा यत्किंचित्कर्म वैदिकम् ।
कुर्वन्विप्रः सदा भक्तया महदाप्नोति तत्फलम् ॥

रुद्राक्ष धारण करके जो कुछ कर्म ब्राह्मण वेद के अनुसार करता है उससे बड़े पुण्य को प्राप्त करता है ।

रुद्राक्षमालिकाम् कंठे धारयेत् भक्तिवर्जितः ।
पापकर्मा तु यो नित्यं स मुक्तः सर्वबन्धनात् ॥

जो भक्ति रहित होकर भी कण्ठ में रुद्राक्ष की माला को धारण करता है वह पापकर्मी भी मुक्त हो जाता है ।

रुद्राक्षर्पितचेता यो रुद्राक्षस्तु न वै धृतः,
असौ महेश्वरो लोके नमस्यः स तु लिंगवत् ।
अविद्यो वा सविद्यो वा रुद्राक्षस्य तु धारणात्,
शिवलोकं प्रपद्येत कीटके गर्दभो यथा ॥

जो रुद्राक्ष में चित्त लगाकर रुद्राक्ष धारण करता है वह शिवभक्त शिवलोक में शिव के समान नमस्कृत होता है । विद्यावान या अविद्यावान कोई भी रुद्राक्ष धारण करे शिव-लोक को प्राप्त होता है । जैसे कीटक देश में गर्दभ मुक्त हुआ था ।

स्कन्द उवाच

रुद्राक्षान्संदधे देव गर्दभाः केन हेतुना।
कीटके केन वा दत्तस्तद्ब्रू हि परमेश्वर।।

स्कन्द जी ने पूछा—हे देव ! गर्दभ ने किस प्रकार से रुद्राक्ष धारण किया ? कीटक में किसने उसे मार दिया, सो आप भली प्रकार से कहिए।

श्री भगवान् उवाच

श्रृणु पुत्र पुरावृतं गर्दभो विध्यपर्वते,
धत्ते रुद्राक्ष भारं तु वाहितः पथिकेन तु।
श्रांतोऽसमर्थस्तद्भारं वोढुं पतितवान्भुवि,
प्राणैस्त्यक्तस्त्रिनेत्रस्तु शूलपाणिर्महेश्वरः।।

श्री भगवन् बोले—सुनो पुत्र ! विन्ध्याचल पर्वत पर एक गर्दभ रहता था। वह एक पथिक द्वारा रुद्राक्ष भार ढोया करता था। एक समय वह भार उठाने में असमर्थ होकर भूमि पर गिर गया और उसके प्राण निकल गये। तव त्रिनेत्र शूलपाणि महेश्वर रूप होकर—

मत्प्रसादान्महासेन मदंतिकमुपागतः
यावद्वक्त्रास्य संख्यानं रुद्राक्षाणां सुदुर्लभम् ;
तावद्युगसहस्राणि शिवलोके महीयते।

मेरे प्रसाद से वह मेरे समीप आया तो जितने रुद्राक्षों के मुख की संख्या थी उतने ही दुर्लभ सहस्र वर्ष उसने शिवलोक में प्रतिष्ठा पाई।

स्वशिष्येभ्यस्तु वक्तव्यं नाशिष्येभ्यः कदाचन,
अभक्तेभ्योऽपि मूर्खेभ्यः कदाचिन प्रकाशयेत्।

अभोक्तोवास्तु भक्तो व नीचो नीचतरोऽपि वा
रुद्राक्षान्धारयेद्यस्तु मुच्यते सर्वपातकैः ॥

यह बात अपने शिष्यों से ही कहनी चाहिए, अशिष्यों से नही कहनी चाहिए। अभक्तों तथा मूर्खों के सामने इन कथाओं को न कहे। कोई भक्त या अभक्त नीच से नीच भी क्यों न हो जो रुद्राक्ष धारण करता है, सब पातकों से छूट जाता है।

रुद्राक्षधारणम् पुन्यकेन वा सदृशं भवेत्,
महाव्रतमिदं प्राहुर्मुनयस्तत्त्वदर्शिनः।

रुद्राक्ष के धारण का पुण्य किसके समान कहे! तत्त्वदर्शी मुनियों ने रुद्राक्ष धारण को महाव्रत कहा है।

सहस्त्रं धारयेद्यस्तु रुद्राक्षाणां धृतव्रतः।
तं नमन्ति सुराः सर्वे यथा रुद्रस्थैव सः॥

जो सहस्त्र रुद्राक्ष को धारण करता है उसे समस्त देवता प्रणाम करते हैं, वह रुद्र के समान है।

अभावे तु सहस्रस्य बाह्वोः षोडशषोडशः
एकं शिखायां करयोर्द्वादशैव तु।
द्वात्रिंशत्कंठदेशे तु चत्वारिंशच्च मस्तके,
एकैकं कर्णयोः षट्षट् वक्षस्यष्टोत्तरं शतम्,
यो धारयति रुद्राक्षान्रुद्रवत्स तु पूज्यते॥

सहस्त्र न मिले तो दोनों भुजाओं में सोलह-सोलह धारण करे। शिखा में एक, हाथ में बारह, कण्ठ में बत्तीस और चालीस मस्तक में, एक-एक कान में, छः-छः वक्षस्थल में, यों एक सौ आठ रुद्राक्ष जो धारण करता है वह रुद्र के समान पूजित होता है।

मुक्ताप्रवालस्फटिकरौप्यवैडूर्यकांचनैः,
समेतान्धारयेद्यस्तु रुद्राक्षान्स शिवो भवेत् ।

मुक्ता प्रवाल, (मूंगा) स्फटिक, चाँदी, वैडूर्यमणि और स्वर्ण सहित जो रुद्राक्ष धारण करता है वह शिवरूप होता है ।

केवलानपि रुद्राक्षान्यद्यालस्याद्बिभर्ति यः
तं न स्पृशंति पापानि तमांसीव विभावसुम् ।

जो केवल आलस्य से भी रुद्राक्षों को धारण करता है उसको वैसे ही पाप नहीं छू सकते जैसे सूर्य को अन्धकार ।

रुद्राक्षमालयामन्त्रो जप्तोऽनंतफलप्रदः,
यस्यांगे नास्ति रुद्राक्ष एकोऽपि बहुपुण्यदः,
तस्य जन्म निरर्थकैः ।

रुद्राक्ष माला का मन्त्र जपने से अनन्त फल का देने वाला होता है । जिनके अंग में बहुत से पुण्य प्रदान करने वाला एक भी रुद्राक्ष नहीं है उसका जन्म निरर्थक होता है ।

रुद्राक्ष मस्तकै धृत्वा शिरः स्नानं करोतियः,
गंगा स्नान फलं तस्य जायते नात्र संशय ।

इसमें संशय नहीं है कि रुद्राक्ष सिर पर धारण करके जो सिर सहित स्नान करता है उसे गंगास्नान का फल प्राप्त होता है ।

भवस्या संपूज्यते नित्यं रुद्राक्षः शंकरात्मकः,
दरिद्रं वादि पुरुषं राजानं कुरुते भुवि ।

जो भक्त शंकरात्मक रुद्राक्ष का भक्तिपूर्वक पूजन करता है वह दरिद्र को भी राजा कर देता है ।

अत्र ते कथयिष्यामि पुराणं मतमुत्तम्—
कोसलेषु द्विजः कश्चिद्गिरिनाथ इति श्रुतः
महाधनी च धर्मात्मा वेद वेदांग पारंगतः ।
यज्ञकृद्दीक्षितस्तस्य तनयः सुन्दराकृतिः,
नाम्ना गुणनिधिः ख्यातस्तरुणः कामसुन्दरः ।

आपसे पुराण का एक उत्तम मत कहता हूँ—

कोसल देश में गिरिनाथ नाम का कोई ब्राह्मण बड़ा विख्यात, महाधनी, धर्मात्मा, वेदवेदांगों में पारंगत, यज्ञ करने वाला और दीक्षित था। उसका पुत्र भी सुन्दर गुणनिधि नाम वाला तरुण कामयत् सुन्दर था।

गुरोः सुधिषणस्याथ पत्नीं मुक्ताव लीमथ,
मोहायमास रूपेण यौवनेन मदेन च ।
संग तस्तु तया सार्धं किंचित्कालं ततो भिया,
विषं ददौ च गुरुवे ये मे पश्चातु निर्भयः ।

वह सुधिषण गुरु की मुक्तावली पत्नी को अपने रूप-यौवन मद से मोहित करता हुआ तथा उसके साथ भय सहित संगति करता हुआ कुछ काल के बाद गुरु को विष देकर उससे निर्भय होकर मैथुन करने लगा।

यदा माता पिता कर्म किंचिज्जानाति यत्क्षणे,
मातरं पितरं चापि मारयामास तद्विषात् ।
नानाविलास भोगैश्च जाते द्रव्यव्यये ततः,
ब्राह्मणानां गृहे चौर्यं चकार स तदा खलः ।

जब मात-पिता ने उसके इस कुकर्म को जाना तो उसने उन्हें भी मार डाला। तब अनेक प्रकार से भोग विलास में द्रव्य के व्यय हो जाने से वह दुष्ट ब्राह्मणों के घर चोरी करने लगा।

सुरापानपदोन्मत्तस्तदा ज्ञातिबहिष्कृतः,
ग्रामान्निष्कासितः सर्वैस्तदा सोऽभूद्वनेचरः।
मुक्तावल्या तथा सार्धं जगाम गहनं वनम्,
मार्गे स्थितो द्रव्यलोभाज्जघान ब्राह्मणान्बहून्।

सुरापान से मदोन्मत्त होने के कारण जाति ने उसको बाहर कर दिया और सबने मिलकर उसको ग्राम से निकाल दिया तो वह बनचारी हो गया। तब वह उस मुक्तावली के साथ गहन बन में चला गया। मार्ग में जाते हुए उसने धन के लोभ से बहुत से ब्राह्मणों को मार डाला।

एकं बहुगते काले ममार स तदाऽधमः,
नेतुं तं यमदूताश्च समाजग्मुः सहस्रशः।

इस प्रकार बहुत समय बीतने पर वह अधम मृत्यु को प्राप्त हो गया तो उसको लेने के लिए अनेक यमदूत आये।

शिवलोकाच्छिवगणास्तथैव च समागताः।
तयोः परस्परं वादो बभूव गिरिजासुत॥

हे गिरजासुत, उसी अवसर पर शिवलोक से शिवजी के गुण आये तो दोनों में परस्पर विवाद होने लगा।

यमदूतास्तया प्रोचुः पुण्यमस्य किमस्ति हि,
ब्रुवन्तु सेवकाः शम्भोर्यद्दृयेनं नेतुमिच्छव।
शिवदूतास्तदा प्रोचुरयं यस्मिन्स्थले मृतः,
दशहस्तादधो भूमे रुद्राक्षस्तत्र चास्ति हि॥

यमदूत बोले—हे शिव के सेवको कहो कि इसका पुण्य कर्म क्या है जिसके कारण तुम इसे लेने के लिए आये हो?

शिवदूत बोले—यह जिस स्थान पर मरा हुआ है वहाँ भूमि में दस हाथ नीचे रुद्राक्ष है।

तत्प्रभावेन हे दूता नेष्यामः शिवसन्निधिम्,
ततोविमानमारुह्य दिव्यरूपधरो द्विजः ।
गतो गुणनिधिर्दूतैः सहितः शंकरालयम्,
इति रुद्राक्षमाहात्म्यं कथितं तव सुव्रत ॥

हे दूतो ! उसी के प्रभाव से हम इसको शिव की सन्निधि में ले जायेंगे । तब वह गुणनिधि नामक ब्राह्मण दिव्य रूप धर कर विमान पर चढ़ दूतों के साथ शिव के स्थान को गया । हे सुव्रत ! यह तुमसे रुद्राक्ष का महात्म्य कहा ।

एवं रुद्राक्ष महिमा समासात्कथितो मया,
सर्वपापक्षय करो महापुण्यफल प्रदः ।

यह रुद्राक्ष की महिमा तुमसे कही जो सर्वपाप क्षयकारी, महापुण्य का फल देने वाली है ।

रुद्राक्ष के लक्षण और मन्त्र न्यास



श्री नारायण उवाच

एवं नारद षड् वक्त्रो गिरिशेन विबोधितः,
रुद्राक्ष महिमानं च ज्ञात्वाऽसीत्स कृतार्थकः ।
इत्थंभूतानुभावोऽयं रुद्राक्षो वर्णितो मया,
सदाचार प्रसंगेन शृणु चान्यत्समाहितः ।
यथा रुद्राक्षमहिमा वर्णितोऽनन्त पुण्यदः,
लक्षणं मन्त्र विन्यासं तथाऽहं वर्णयामि ते ।

श्री नाराणज़ी बोले—हे नारद ! इस प्रकार शिवजी नें कार्तिकेय से कहा था तो वह रुद्राक्ष की महिमा जानकर कृतार्थ हुए । इस प्रकार रुद्राक्ष का प्रभाव मैंने कहा अब सदाचार के और प्रसंग सुनो—जैमे रुद्राक्ष की महिमा बहुत पुण्य की देने वाली कही है वैसे ही लक्षण और मन्त्र न्यास भी मैं तुमसे कहता हूँ ।

रुद्राक्षाणां तु भद्राक्ष धारणात्स्यान्महाफलम्,
धात्री फल प्रमाणं यत्श्रेष्ठमेतदुदाहृतम् ।

रुद्राक्षों में भद्राक्ष धारण का बड़ा पुण्य है । आंवले के समान आकार वाले रुद्राक्ष श्रेष्ठ हैं ।

बदरीफल मात्रं तु प्रोच्यते मध्यमं बुधैः,
अधमं चण मात्रं स्यात्प्रतिज्ञैषा मयोदिता ।

बेर के समान आकार के मध्यम, चने के समान आकार के रुद्राक्ष अधम हैं, यह मेरी प्रतिज्ञा है।

ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्यः शूद्राश्चेति शिवाज्ञया,
वृक्षा जाताः पृथिव्यां तु तज्जातीयाः शुभाक्षकाः।

शिव की आज्ञा से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र ये चार प्रकार के रुद्राक्ष के वृक्ष हैं उन्हीं की जाति वाले सुभाक्ष कहाते हैं।

श्वेतास्तु ब्राह्मणा ज्ञेयाः क्षत्रिया रक्तवर्णकाः,
पीतावैश्यास्तु विज्ञेयाः कृष्णा शूद्रा प्रकीर्तितः।

श्वेत वर्ण ब्राह्मण, रक्त वर्ण के क्षत्रिय, पीत वर्ण के वैश्य और कृष्ण वर्ण के रुद्राक्ष शूद्र जानने चाहिए।

ब्राह्मणो विभृयाच्छ्वेतात्रक्तात्राजा तु धारयेत्,
पीतान्वैशयस्तु विभृयात्कृष्णाञ्छूद्रस्तु धारयेत्।

ब्राह्मण श्वेत वर्ण के रुद्राक्ष, क्षत्रिय लाल वर्ण के रुद्राक्ष, वैश्य पीले रंग के रुद्राक्ष और शूद्र कृष्ण वर्ण के रुद्राक्ष धारण करें।

समाः स्निग्धा दृढ़ास्तद्वत्कंटकैः संयुताः शुभा,
कृमिदष्टान्छि भिन्नान्कंटकै रहितांस्तथा।
व्रणयुक्तानावृतांश्च षड्रुद्राक्षांस्तु वर्जयेत्,
स्यमेव कृतद्वारो रुद्राक्षः स्यादिहोत्तमः।

समान स्निग्ध और दृढ़ कंटक उठे हुए रुद्राक्ष शुभ होते हैं। कृमिदृष्ट, छिन्न-भिन्न, कंटकी से रहित, व्रणयुक्त, अनावृत्त ये छः प्रकार के रुद्राक्ष धारण न करें। जिसमें स्वयं छिद्र हो वह उत्तम रुद्राक्ष है।

यत्तु पौरुषयत्नेन कृतं तन्मध्यम् भवेत्,
समान्स्निग्धान्दृढ़ान्नृतान्क्षोमसूत्रेण धारयेत्,
सर्वगात्रयेषु साम्येन समानाऽतिविलक्षणा।

वह रुद्राक्ष जिसमें यत्नपूर्वक छिद्र किया गया हो मध्यम प्रकार का है। समस्निग्ध, दृढ़, गोलदानों को रेशम के सूत्र से पहने। सारे शरीर में साव्यता पूर्वक बिलक्षण रुद्राक्ष धारण करे।

निघर्षे हेमलेखाभा यत्र लेखा प्रदृश्यते,
तदक्षमुत्तमं विद्यात्स धार्यः शिवपूजकैः।

जैसे कसौटी पर घिसने से स्वर्ण की रेखा पड़ जाती है इसी प्रकार जिस रुद्राक्ष की कसौटी पर रेखा पड़ जाये वह उत्तम रुद्राक्ष शिव भक्तों को सदा धारण करना चाहिए।

त्रिशतं त्वधमं पंचशतं मध्यभमुच्यते;
सहस्रमुत्तमम् प्रोक्तं चैव भेदेन धारयेत—

तीन सौ रुद्राक्ष का धारण करना अधम, पाँच सौ धारण मध्यम और एक सौ का धारण करना उत्तम है। इन्हें इस प्रकार के भेद से धारण करे—

शिरसीशान मन्त्रेण कर्णे तत्पुरुषेण च,
अघोरेणललाटें तु तेनेव हृदयेऽपि च।
अघोर वीज मन्त्रेण करे यो धारयेत्पुनः,
पंचादशग्रथितां वामदेवेन् चोदरे।

सिर में ईशान मन्त्र से, कान में 'तत्पुरुषाय विद्महे' इत्यादि मन्त्र से, ललाट में अघोर मन्त्र से, अघोर मन्त्र से ही हृदय में

और अघोर बीज मन्त्र से हाथों में धारण करे। पचास रुद्राक्ष की माला 'वामदेव' मन्त्र से उदर में धारण करे।

पंचब्रह्मभिरंगेश्चाप्येवं रुद्राक्षधारणम्,
ग्रथितामूलमंत्रेण सर्वानक्षांस्तु धारयेत।

इस प्रकार पंचब्रह्म मन्त्र से अंगों में रुद्राक्ष धारण करे। मूल मन्त्रों से ग्रथित कर रुद्राक्षों को धारण करे।





[किस धारणा से कौनसा रुद्राक्ष धारण करना चाहिए]

१.

एक मुखी रुद्राक्ष परातत्व का प्रकाशक है। परमतत्व की प्राप्ति की धारणा से इसको धारण करना चाहिए। सहज ही ईश्वर प्राप्ति की शक्ति एक मुखी रुद्राक्ष धारण के द्वारा कही गई है।

२.

द्विमुखी रुद्राक्ष अर्धनारीश्वर होता है। इसे धारण करने से अर्धनारीश्वर प्रसन्न हो जाते हैं; ऐसी शक्ति दो मुखी रुद्राक्ष के धारण करने की कही गई है।

३.

त्रिमुखी रुद्राक्ष तीन अग्नियों के रूप वाला है। इसके धारण करने से अग्नि की तृप्ति होती है। स्त्री हत्या के पाप से मुक्त कराने की शक्ति विशेष, तीन मुखी रुद्राक्ष में है।

४.

चतुर्मुखी रुद्राक्ष पितामह ब्रह्मा के स्वरूप वाला है। इसके धारण करने से श्री और उत्तम आरोग्य की प्राप्ति होती है। अर्थात् इसके धारक का स्वास्थ्य ठीक रहता है। नरहत्या के पाप को दूर करने की शक्ति इस रुद्राक्ष में है। इसे महाज्ञान, शुद्धि और सम्पत्ति के निमित्त भी मनुष्य को धारण करना चाहिए।

५.

पंचमुखी रुद्राक्ष पंचब्रह्म स्वरूप वाला है। इसके धारण मात्र से शिवजी सन्तुष्ट होते हैं। यह अभक्ष्याभक्ष्य और अगम्यागमन के पाप से छुटकारा करता है। इस पंचमुखी रुद्राक्ष की शक्ति का नाम रुद्रकालाग्नि भी कहा गया है।

६.

षण्मुखी (छः मुख वाले) रुद्राक्ष के देवता कार्तिकेय हैं। कई बुद्धिमान इसके देवता गणेश को भी मानते हैं, लेकिन इसके धारण करने से दोनों प्रसन्न होते हैं। छ-मुखी रुद्राक्ष के बायें हाथ में धारण करने से ब्रह्महत्या दूर हो जाने की शक्ति का वर्णन मिलता है।

७.

सात मुखी रुद्राक्ष की देवता सात मातायें हैं। सूर्य और सप्तऋषि भी इसके देवता हैं। इसके पहनने से महालक्ष्मी की प्राप्ति होती है। पवित्र होकर धारण करने से इसके द्वारा बड़ी ज्ञानसम्पत्ति भी प्राप्त होती है। स्वर्ण की चोरी आदि के पाप से मुक्ति दिलाने की शक्ति इसमें विशेष है।

८.

अष्टमुखी रुद्राक्ष की आठ मातायें देवता हैं। यह आठों वसु और गंगा को प्रसन्न करने वाला है। इसको पहनने से सत्यवादी सब देवता प्रसन्न होते हैं। दुष्टवंश की स्त्री और गुरुपत्नि का स्पर्शादि पापों से मुक्ति दिलाने का उपाय आठ-मुखी रुद्राक्ष धारण करना है। और भी कई पापों के नष्ट करने की शक्ति इसमें है।

९.

नौमुखी रुद्राक्ष के देवता भैरव और यमराज हैं। इसके धारण कर लेने से यमराज का भय नहीं रहता। इसी को बाईं भुजा में पहनने से बल मिलता है। भ्रूणहत्या (गर्भपात) करने के प्रायश्चित स्वरूप नवमुखी रुद्राक्ष धारण कर लेने पर पाप से मुक्ति होती है।

१०.

दश मुखी रुद्राक्ष की स्वामी दसों दिशायें हैं। भगवान विष्णु भी इसके देवता हैं। इसके धारण करने से दसों दिशाओं में प्रीति बढ़ती है। भूत, पिशाच, बेताल, ब्रह्मराक्षस आदि सब दशमुख रुद्राक्ष से शान्त होते हैं। इसके धारण से मनुष्य के सर्वग्रह शान्त करते हैं, ऐसी शक्ति इसमें है।

११.

एकादश मुखी रुद्राक्ष के ग्यारह रुद्र देवता हैं। इन्द्र भी इसके स्वामी कहलाते हैं। जो कुछ दान करने की अभिलाषा रही हो परन्तु दान न कर पाया हो तो ग्यारह मुखी रुद्राक्ष शिखा में धारण कर लेने से दान की पूर्ति हो जाती है क्योंकि हजारों गोदान का जो पुण्यफल है वह इसको पहनने वाले को मिलता है।

१२.

बारहमुखी रुद्राक्ष महाविष्णु के स्वरूप वाला है। बारहों आदित्य इसके देवता हैं। इसके पहन लेने से किसी भी शस्त्र-धारी और व्याघ्र इत्यादि का भय नहीं व्यापता। इसके धारण करने वाला आधिब्याधि से दूर होकर राजा बनने के योग्य होता है। शासन करने की इच्छा करने बाले व्यक्ति को इसका धारण करना बड़ा लाभप्रद है।

१३.

तेरह मुखी रुद्राक्ष के देवता कामदेव हैं। यह काम और रस-रसायन को सिद्धि प्रदान करने वाला है। इसके धारण करने वाले को सब प्रकार के भोग प्राप्त होते हैं। किसी बन्धु-बान्धव को मारे हुए का पाप को छुड़ाने के लिए इसका धारण करना उत्तम है।

१४.

चौदह मुखी रुद्राक्ष रुद्र के नेत्र से प्रकट हुआ है। यदि चौदह मुख वाला रुद्राक्ष मिल जाये तो इसे सिर पर धारण करने से बहुत मान सम्मान मिलता है। इस रुद्राक्ष के अनन्त गुण हैं। इसको पहनने से मनुष्य साक्षात् शिव स्वरूप हो जाता है।

विद्वानों द्वारा रुद्राक्ष २१ मुख तक के माने जाते हैं परन्तु इनका वर्णन पौराणिक ग्रन्थों में उपलब्ध नहीं हैं। विविध प्राचीन ग्रन्थों में १४ मुखी रुद्राक्ष तक का ही वर्णन मिलता है।



रुद्राक्षधारी के अभक्ष्य



रुद्राक्षधारी निम्नलिखित वस्तुओं का सेवन न करें :-

१. मद्य २. आमिष (माँस-मछली-अण्डा)
३. लहसुन ४. प्याज
५. शिग्रु (संहिजना) ६. श्लेष्मातक (लहसोड़ा)
७. विड्वराह

रुद्राक्ष धारण के लिए अतिशुभ समय

१. ग्रहण २. मेष संक्रान्ति
३. अयन ४. अमावस
५. पूर्णिमा ६. अन्य कोई पवित्र दिन

रुद्राक्ष की माला में दानों की संख्या

★ १०० दानों की माला मोक्ष प्रदान करती है।

★ १४० दानों की माला बल व आरोग्यता प्रदान करती है।

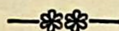
★ १०८ दानों की माला समस्त कार्यों में सिद्धि देने वाली होती है।

★ ३२ दानों की माला धनदायिनी होती है।

★ जप के लिये प्रयुक्त की जाने वाली माला १०८ दानों की होती है। ५४ दानों की आधी और २७ दानों की माला को सुमिरनी कहते हैं, फल सभी का एक समान होता है। केवल ५४ दानों की माला दो बार और २७ दानों की माला को चार बार पूरी कर लेने पर एक माला सम्पूर्ण होती है।

★ तीन सौ आठ रुद्राक्षों की लड़ी बनाकर यज्ञोपवीत धारण किया जाता है।

★ शिखा में एक, कानों में छः-छः, कण्ठ में एक सौ एक या पचास, बाहों में ग्यारह, कर्पूर व मणिबन्ध में ग्यारह, कटि में पाँच रुद्राक्ष धारण करने चाहिये।





रक्तचाप में--

उच्चरक्तचाप अर्थात् हाई ब्लड प्रेशर (High Blood Pressure) के रोगियों के लिए रुद्राक्ष धारण करना वरदान के समान है। यह रक्तचाप को नियन्त्रित रखता है। इसके लिए ये आवश्यक है कि रुद्राक्ष की माला रोगी के हृदय तक की हो। रुद्राक्ष का केवल एक भी दाना यदि रोगी के हृदय से छूता हुआ रहेगा तो वह भी उतना ही प्रभाव रखता है जितना कि एक पूरी माला। यह रोगी के शरीर की गर्मी को अपने में खींचकर उसे बाहर फेंकता है। ऋषि-मुनियों का मत है कि रुद्राक्ष के धारण करने से मन को शान्ति मिलती है। रुद्राक्ष की भस्म को स्वर्णमाक्षिक भस्म के साथ बराबर की मात्रा में १-१ रत्ती सुबह-शाम दूध, दही या मलाई के साथ रोगी को दिया जाए तो ये चमत्कारी प्रभाव दिखाता।

मसूरिका रोग में--

इस रोग में तीन दिन तक वासी जल के अनुपान से रुद्राक्ष एवं काली मिर्च समभाग करके एक माशा से तीन माशे तक सेवन करने से यह रोग नष्ट हो जाता है।

अपस्मार रोग में--

रुद्राक्ष के गूदे का सेवन अपस्मार रोग में लाभदायक है।

पुरानी खाँसी में--

यदि दस मुखी रुद्राक्ष को दूध के साथ घिस कर रोगी को दिन में तीन बार चटाया जाये तो खाँसी जड़मूल सहित नष्ट हो जाती है।

स्त्री रोगों में--

हिस्टीरिया, मूर्छा और प्रदर आदि स्त्रियों से सम्बन्धित रोगों में छः मुखी रुद्राक्ष का धारण करना पूर्ण रूप से सफलता प्रदान करना है।

मानसिक रोगों में--

चतुर्मुखी रुद्राक्ष को दूध में उबाल कर बीस दिन तक पीने से मन और मस्तिष्क के सभी विकार दूर होते हैं। स्मरण शक्ति क्षीण हो तो रुद्राक्ष परम लाभकारी है।

सर्वरोग निवारक--

एक प्रकार का रुद्राक्ष ऐसा भी होता है जो गोलाकार सपाट, जिसका पृष्ठ भी उभरा हुआ नहीं होता है, किसी प्रकार की धारियां भी उस पर नहीं होतीं—उसे आंवलासार रुद्राक्ष कहते हैं। इस प्रकार का रुद्राक्ष सूखे हुए आंवले के रंग का होता है। ये रुद्राक्ष बाजारों में कम मिलता है इसका प्रचलन भी कम है लेकिन उत्तर काशी के उत्तरी पश्चिमी प्रदेश में पैदा होता है जहाँ से इसे प्राप्त किया जा सकता है। यदि ये रुद्राक्ष मिले तो ये सर्वरोग निवारक है। आंवलासार रुद्राक्ष कैंसर तक के रोगी में लाभकारी है। वैसे साधारणतया—क्षयरोग और चर्म रोग में विशेष फलदाई है।

रुद्राक्ष का आकार

रुद्राक्ष के दाने आंवले के फल के आकार से लेकर काली मिर्च के बराबर आकार तक के मिलते हैं। छोटे आकार का रुद्राक्ष जप आदि कार्यों में विशेष फलदायक माना गया है और बड़ा रुद्राक्ष रोगों पर अधिक लाभकारी होता है। एक-मुखी से लेकर चौदहमुखी तक के रुद्राक्ष विभिन्न आकारों में मिलते हैं।

रुद्राक्ष का नाम और पहचान

हिन्दी-संस्कृत-बंगला-पंजाबी आदि में—रुद्राक्ष

तमिल, तेलगू, कन्नड़ (दक्षिण भारत) में—रुद्राज कोटि

अंग्रेजी में—UTRASUM BEAD

लेटिन में—ELAEOCARPUS GANITRUS ROXB

रुद्राक्ष की पैदावार—

रुद्राक्ष एक विशेष किस्म का जंगली फल है जो अधिकांश पर्वतराज हिमालय के वनों में पैदा होता है। रुद्राक्ष के वृक्ष मध्यम आकार के होते हैं। ये वृक्ष नेपाल, आसाम व अन्य कई स्थानों पर पाये जाते हैं। इसका वृक्ष बागों में भी लगाया जाता है। वृक्ष के पत्ते लगभग तीन से छः इन्च तक लम्बे, अण्डाकार, प्रासवत या आयताकार होते हैं। इसका फूल सफेद होता है। फल गोलाकार नीले रंग के आधा इन्च से एक इन्च व्यास तक के होते हैं। फल खाने में मीठा व कुछ कसैला-खटास भरा होता है। जंगली झाड़ियों में पैदा होने वाले बेर के समान इसका स्वाद कहा जा सकता है। फल कार्तिक मास के अन्त में या

मार्गशीर्ष मास में लगना शुरू होता है। इसके फल को बनों में रहने वाले पक्षी चाव से खाते हैं। जब ये फल पेड़ पर सूखने लगता है तो पृथ्वी पर गिरता है। इसके ऊपर एक प्रकार का छिलका चढ़ा हुआ रहता है। छिलका उतार देने पर ये फल रुद्राक्ष के रूप में निकल आता है। छिलका उतारने पर गुठली पर एक से इक्कीस तक नलियाँ बनी रहती हैं (जिसे आध्यात्मिक भाषा में मुख कहा गया है) गुठली के पृष्ठ पर दानेदार मुद्रायें बनी रहती हैं इसी को रुद्राक्ष कहा गया है। इस गुठली को यदि फोड़ा जाये तो चार-पाँच बीज एवं कोष होते हैं। इन्हीं गुठलियों को साफ करके चमकदार बनाकर उनकी माला तैयार की जाती है। कभी-कभी कुछ रुद्राक्ष ऐसे भी निकल आते हैं जिनमें प्राकृतिक रूप से छेद होता है। ये प्राकृतिक छिद वाले रुद्राक्ष सर्वोत्तम होते हैं। अन्यथा सभी दानों में छेद करने पड़ते हैं तभी माला पिरोई जा सकती है।

भारत के उत्तर प्रदेश के जिला उत्तरकाशी में गंगोत्री-यमुनोत्री क्षेत्र में भी रुद्राक्ष पैदा होता है। तिब्बत में भी रुद्राक्ष पाया जाता है। सबसे अधिक रुद्राक्ष का उत्पादक नेपाल राज्य का जिला भोजपुर है जो उत्तर प्रदेश में बिहार राज्य की सीमा से लगता है। नेपाल में ही रुद्राक्ष सबसे अधिक पैदा होता है। राज्य के नियमानुसार एक मुखी जितने भी रुद्राक्ष उत्पन्न होंगे वह सब शाही-खजाने में जमा कराने पड़ते हैं, उनके बाजार में बिकने पर प्रतिबन्ध है। यदि कोई व्यक्ति एक मुखी रुद्राक्ष को नेपाल नरेश के कोष में जमा नहीं कराये तो कड़ा दण्ड दिया जाता है। इस प्रकार एक मुखी रुद्राक्ष पर नेपाल नरेश का पूर्ण अधिपत्य है। जमा कराने वाले को राज्य की ओर से कुछ धन-सम्पदा प्रदान की जाती है। उत्तर प्रदेश या अन्य स्थानों पर

मिलने वाले एक मुखी रुद्राक्ष पर नेपाल नरेश का अधिकार नहीं है। इसी कारण से विशिष्ट व्यक्तियों, साधु, सन्यासी, महन्तों, नेताओं को एक मुखी रुद्राक्ष मिल जाता है।

भारत वर्ष की सीमा में जो रुद्राक्ष पैदा होते हैं उन पर भी बड़े-बड़े व्यापारियों का अधिकार हो गया है। क्योंकि जहाँ भी रुद्राक्ष पैदा होता है वहाँ का ठेका व्यापारी वर्ग ले लेता है। व्यापारी अपनी रुचि के अनुसार उसे विदेशों में निर्यात करते हैं। आजकल पश्चिमी देशों में निर्यात करने लगे हैं। आजकल पश्चिमी देशों में रुद्राक्ष की बहुत माँग है। अच्छे किस्म के रुद्राक्ष निर्यात कर दिये जाते हैं या व्यापारी मुंह मांगा मूल्य वसूल करते हैं।

इन्डोनेशिया, जावा, सुमात्रा व चीन के कुछ भागों में भी रुद्राक्ष पैदा होता है। सबसे बड़े आकार का रुद्राक्ष (बिना धारी वाला) जावा से आयात किया जाता है।

रुद्राक्ष के विभिन्न रंग

१—प्रथम प्रकार के रुद्राक्ष गहरे चाकलेट रंग, गहरे कत्थई रंग अथवा छुआरे से भी गहरे दिखाई पड़ने वाले होते हैं। गहरा गुलाबी रंग भी होता है।

२—द्वितीय श्रेणी का रुद्राक्ष चाकलेट रंग, मध्यम कत्थई और बादाम की गिरी जैसे रंग का होता है। मटियाला सा रंग भी पाया जाता है।

३—तीसरी श्रेणी का रुद्राक्ष कुछ सफेदी लिए हुए, कत्थई अथवा भूरे रंग का होता है। इस रंग में में पाये जाने वाला रुद्राक्ष अधिकांश दो मुखी रुद्राक्ष होता है।

रुद्राक्ष की जाँच (असली या नकली)

अधिकतर रुद्राक्ष असली होते हैं। नकली रुद्राक्ष वे ही बनाये जाते हैं जो आसानी से नहीं मिलते हैं। दो मुखी से लेकर पाँच मुखी तक के रुद्राक्ष तो सर्व सुलभ हैं इसलिए इनमें नकली का प्रश्न नहीं है। केवल किस्म व आकार के अन्तर से मूल्य में थोड़ा बहुत फर्क होता हैं।

पहली पहचान—रुद्राक्ष कितने ही मुख का हो या किसी भी आकार का हो यदि वह पूर्ण पका हुआ सही रुद्राक्ष है तो पानी में डालने से डूब जायेगा। पानी में डूब जाने वाले दाने को उत्तम प्रकार का रुद्राक्ष मानना चाहिए। जो रुद्राक्ष तैरता है, उसके लिए ये आवश्यक नहीं कि वह लकड़ी का बना है या नकली है लेकिन ये बात निश्चित रूप से कही जायेगी कि वह डूबने वाले रुद्राक्ष से निम्न श्रेणी का है।

दूसरी पहचान—दो ताम्बे के सिक्कों के बीच रुद्राक्ष को रखकर यदि दबाया जाये तो वह एक झटके के साथ दिशा बदल कर घूम जाता है। इसके अतिरिक्त यदि दो ताम्बे के भारी पात्रों के मध्य रुद्राक्ष रखने से वह हिलने लगे तो समझ लो कि रुद्राक्ष असली है।

अतः रुद्राक्ष धारण करने से पूर्व ये जाँच अवश्य कर कि वह बिल्कुल ठीक है या नहीं। जो रुद्राक्ष कीड़े के खाये हों उन्हें धारण न करें। जो रुद्राक्ष खण्डित (टूटा हुआ) हो उसे भी नहीं पहनना चाहिए। सूक्ष्मदर्शी शीशे की सहायता से विखण्डित रुद्राक्ष आसानी से पता लगाया जा सकता है। जो रुद्राक्ष छिद्र करते समय फट जायें वह भी प्रभावहीन होते हैं उन्हें धारण नहीं करना चाहिए।

रुद्राक्ष को पहनने से पूर्व लगभग एक सप्ताह तक उसे शुद्ध सरसों के तेल में डुबा दें। जब आप उसे तेल में से निकालेंगे तो उसका रंग पहले से गहरा प्रतीत होगा। इसके बाद रुद्राक्ष को साफ कागज या रूई पर रख दें जिससे उसका अतिरिक्त तेल साफ हो जाये। फिर शुद्ध जल से या गंगाजल से धोकर विधि के अनुसार धारण करें।

रुद्राक्ष की माला कैसे बनायें ?

रुद्राक्ष चाहे कितने ही मुख वाला हो, सामर्थ्यानुसार सोने अथवा चांदी की छतरी से जुड़वा कर स्वर्णकार से उसका सुन्दर सा आकार बनवा लें। रुद्राक्ष के दानों के दोनों ओर शुद्ध मूंगे के मनके भी पहने जाते हैं। सबसे सस्ता और सरल तरीका ये है कि सूती धागा बटकर उसे मजबूत बनालें और उसमें पिरोकर रुद्राक्ष पहनें। कुछ लोग लाल-नीले रंगों के धागों में पिरोकर माला पहनते हैं लेकिन ये राशि के अनुसार रंग धारण करना होता है। सफेद व पीला रंग सभी के लिए कल्याण देने वाला है। चांदी अथवा सोने की जंजीर में लाकेट बनाकर भी रुद्राक्ष पहना जाता है। एक मुखी रुद्राक्ष प्लेटीनम या पंचधातु की जंजीर में पिरोकर पहनना सर्वोत्तम है। रुद्राक्ष पहनने वाले इस बात का विशेष ध्यान रखें कि रुद्राक्ष का दाना गले में इतना नीचा हो कि छाती को स्पर्श करता रहे, इसके विशेष लाभ हैं। हृदय को स्पर्श करने वाले रुद्राक्ष, हृदय रोग, हृदय कम्पन, शूल, ब्लडप्रेशर, हृदय धड़कना आदि में विशेष प्रभावकारी रहते हैं। रुद्राक्ष को विधि पूर्वक धारण करने वाले को भूत-प्रेत बाधा नहीं होती।

रुद्राक्ष खरीदते समय सावधानियाँ

रुद्राक्ष आध्यात्मिक दृष्टि से जितना मूल्यवान है, उतना भौतिक दृष्टिकोण से नहीं फिर भी रुद्राक्ष खरीदते समय जो सामान्य जानकारी ग्राहक को होनी चाहिए उसकी चर्चा भी आवश्यक है।

रुद्राक्ष खरीदते समय जब दुकानदार ८) रु० से लेकर ४००) रु० तक की माला ग्राहक के सामने रखता है तो निश्चित ही खरीददार के मन में ये बात आती है कि सस्ती वाली माला बेकार है और मंहगी वाली ही असली होगी। चार सौ रुपये वाली माला ही प्रभावशाली होगी और सस्ती वाली नहीं। लेकिन रुद्राक्ष की मालाओं का मूल्य उसके छोटे तथा बड़े आकार के दानों पर निर्भर करता है। आजकल जो मध्यम आकार के रुद्राक्ष की माला जो सबसे सस्ती मिलती है उस रुद्राक्ष के दाने के आकार से रुद्राक्ष जितना छोटा होता जायेगा उसी अनुपात से उसका मूल्य बढ़ता जाता है। काली मिर्च के दाने के बराबर की माला यदि ४००) रु० में मिलती है तो बड़े आँवले के समान रुद्राक्ष के दानों की माला का मूल्य भी लगभग इतना ही होगा।

ठीक इसी प्रकार से रुद्राक्ष के मुखों के हिसाब से भी रुद्राक्ष का मूल्य कम-ज्यादा होता है। पाँचमुखी रुद्राक्ष सबसे कम मूल्य में मिल जाता है जिसके एक दाने की कीमत १०-१५ पैसे होती है। इससे जितने मुख अधिक होते जायेंगे रुद्राक्ष की कीमत भी बढ़ती जायेगी और जितने मुख कम होते जायेंगे तो भी कीमत बढ़ जायेगी।

पाँचमुखी रुद्राक्ष चूँकि सस्ता होता है इसलिए उसमें बेई-मानी नहीं होती लेकिन कुछ बेईमान व्यापारी सात और आठ मुखी रुद्राक्ष नकली नालियाँ बनाकर तैयार करते हैं। यदि आप ध्यान से देखेंगे तो आपको पता लग सकता है कि यह नकली बना है या असली है।

इसी प्रकार से तीन मुखी रुद्राक्ष की एक या दो नालियाँ खत्म करके दो मुखी और एक मुखी रुद्राक्ष बनाया जाता है। किन्तु गौर से देखने पर इसका पता भी लग जाता है। एक मुखी रुद्राक्ष आजकल लगभग अप्राप्य है इसलिए उसका मूल्य हजारों रुपयों में आँका जाता है।

कुछ लोग बेर की गुठलियों की माला भी रुद्राक्ष कहकर बेच देते हैं, परन्तु बेर की गुठली पर न तो धारियाँ ही होती हैं और न ही उसके पृष्ठ पर मुद्रायें बनीं होती हैं।

लकड़ी के बढ़िया कारीगर लकड़ी पर खोद कर भी रुद्राक्ष तैयार करते हैं जिसके तैयार करने में उन्हें १५-२० दिन तक लग जाते हैं और ये कारीगर उसे नेपाल में ले जाकर बेचते हैं। नेपाल जाने वाले यात्री इसे वहाँ से खरीद कर पुनः भारत ले आते हैं। यह नकल केवल एक मुखी रुद्राक्ष के अप्राप्य होने के कारण हो रही है। असली एक मुखी रुद्राक्ष का मूल्य एक लाख रुपये तक आँका जाता है और नेपाल में रुद्राक्ष का व्यापारी ग्राहक को ये विश्वास दिलाता है कि सबसे अधिक रुद्राक्ष नेपाल में पाया जाता है इसलिए वह उसे ५-१० हजार में बेच कर ठग लेते हैं। इसलिए रुद्राक्ष खरीदते समय ग्राहक को पूरी सावधानी से खरीदना चाहिए।

रुद्राक्ष अमूल्य वस्तु है। जैसे भी हो इसे कहीं से भी प्राप्त

करके परीक्षा करके धारण करना चाहिए। रुद्राक्ष के विषय में धारक को किसी प्रकार से भ्रम में न पड़कर श्रद्धा एवं विश्वास के साथ धारण करना चाहिए। रुद्राक्ष धारण करने के ४० दिन के अन्दर जिस कार्य के लिए आप इसे धारण करेंगे उसमें लाभ अवश्य होगा। सोने अथवा चाँदी के तारों में पिरोकर इसकी माला धारण करनी चाहिए। इसके अभाव में लाल धागे का प्रयोग कर सकते हैं।

रुद्राक्ष की माला धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष इन चारों फलों को प्रदान करने वाली है। संसार में इसके समान और कोई माला फलदायी नहीं है। कुछ लोगों को भ्रम है कि इसे साधु-महात्मा ही पहनते हैं लेकिन ये उनकी भूल है। संन्यासियों को जहाँ इसे धारण करने पर धर्म और मोक्ष की प्राप्ति होती है तो वहाँ सांसारिक प्राणी को इसे धारण करने से धर्म की मर्यादा में रह कर अर्थ और काम का उपभोग करते हुए मोक्ष मिलता है। संसार के अनेक प्रकार के भौतिक दुखों में सन्तप्त मनुष्यों के लिए यह शिव का वरदान है। इसे गृहस्थी और साधु सभी धारण कर सकते हैं। रुद्राक्ष धारण करने वाले की अकाल-मृत्यु नहीं होती यह अनुभूत सत्य है।



गौरी शंकर और त्रिजुगी



पुस्तक में वर्णित सब प्रकार के रुद्राक्षों के अलावा कुछ रुद्राक्ष प्राकृतिक रूप से आपस में जुड़े हुए होते हैं (जैसे जुड़वां केला आपने अवश्य देखा होगा) ये जुड़वां रुद्राक्ष भी वृक्ष पर ही होते हैं। अतः इस प्रकार से दो रुद्राक्ष जो जुड़वां उत्पन्न होते हैं उन्हें गौरीशंकर कहते हैं। इसी प्रकार यदि तीन रुद्राक्ष एक साथ जुड़े होते हैं तो उसे त्रिजुगी कहते हैं। ये भी बहुत कम मात्रा में पाये जाते हैं अतएव इनका महत्व भी बहुत हो गया है।

यह रुद्राक्ष शिव और शक्ति का मिश्रित स्वरूप माना जाता है। जो व्यक्ति एक मुखी रुद्राक्ष प्राप्त करने में असमर्थ हों उनके लिए ये उत्तम वस्तु है। घर में, पूजा गृह में, तिजोरी में मंगल कामना की सिद्धि के लिए इसे रखना लाभदायक है। इसे शिवलिंग से स्पर्श कराकर धारण करना चाहिए। धारण करते समय 'ॐ नमः शिवाय' का जाप करते हुए पवित्र स्थान पर बैठकर धारण करें। श्रद्धा तथा विश्वास और शुद्ध मन से धारण करने वाले पर शिव तथा शक्ति दोनों की विशेष कृपा रहती है। विदेशी विद्वानों का भी मत है कि इसे धारण करने मे हिम्मत बनी रहती है और सफलता मिलती है। गौरी शंकर धारण करने वाले को सांसारिक लाभ तो उतने नहीं मिलते जितने रुद्राक्षधारी को मिलते हैं परन्तु आध्यामिक लाभ में कोई कमी नहीं होती। यह भी बाजार

में आसानी से उपलब्ध हो जाता है और मूल्य भी अधिक नहीं होता।

गौरीशंकर में असली-नकली की पहचान

प्राय: जो गौरीशंकर नकली बनाकर बेचे जाते हैं वह इस प्रकार से बनाये जाते हैं—दो पंचमुखी रुद्राक्षों को लेकर पत्थर पर पानी की सहायता से इस प्रकार से घिसा जाता है कि एक ओर की सारी धारियाँ घिस जायें और दोनों घिसे हुए दानों को आपस में फैवीकोल या एरलडाइट से जोड़ दिया जाता है।

असली गौरीशंकर की पहचान ये है कि उस बनी हुई ॰रियाँ प्राकृतिक होती हैं, कुल मिलाकर एक गौरीशंकर पर ८ धारियाँ होंगी परन्तु परस्पर उनमें दूरी का अन्तर है, एक समान दूरी पर नहीं होती। असली गौरीशंकर के समान होगा। काफी शक्ति लगाने पर भी उसे तोड़ना ानों रुद्राक्षों का अलग हो जाना कठिन है। यदि आप ॰ण के रूप में उसे तोड़ देंगे तो टूटे हुए भाग समान सपाट होंगे, उनका टूटना प्राकृतिक रूप विखण्डित होगा। इसी ॰र यदि आप किसी रुद्राक्ष को भी तोड़ेंगे तो टूटे हुए खण्ड तिरछे-बाँके होंगे जैसे कोई पत्थर टूटता है।

त्रिजुगी के असली नकली की पहचान भी उपरोक्त आधार पर की जा सकती है। त्रिजुगी प्राकृतिक रूप से कम उत्पन्न होते हैं इसलिए इनका मूल्य भी गौरीशंकर से अधिक होता है।

हस्त सामुद्रिक शास्त्र

अपने भाग्य में क्या लिखा है ?

आपके हाथ की रेखाओं पर विश्वास करो। हमारी पुस्तक की मदद से आपका हाथ इन बातों का उत्तर देगा।

१. आपकी आयु लगभग कितनी होगी ? २. आप रोग से कब मुक्त होंगे ? ३. आपकी मृत्यु कब और कैसे होगी ? ४. आपका जीवन सुखमय या दुखमय ? ५. आपके जीवन में क्या कोई भयंकर घटना घटेगी ? ६. आपके कितने लड़के और लड़कियाँ होंगे ? ७. आपकी मृत्यु पत्नी से पहले या पीछे? ८. आप निर्धन बनेंगे या धनवान ?

इत्यादि जीवन की रहस्यमयी बातों पर हस्तरेखा द्वारा प्रकाश डाला गया है। सजिल्द पुस्तक सचित्र कीमत १५)०० डाक व्यय अलग।

तेजी मन्दी का सट्टा

एक ही चांस में लखपती बनाने वाला ग्रन्थ

सट्टा, लाटरी और रेस से ठीक नम्बर बताने वाली उत्तम किताब। केवल मामूली गुणा भाग से ठीक नम्बर निकल आता है जो कभी खाली नहीं जाता। आज सट्टे की विद्या जानने वाला लाखों रुपया कमा रहा है। कीमत १५)०० डाक व्यय अलग।

लगन चन्दिका

इस ज्योतिष की किताब में स्त्री सम्बन्धी, शुभाशुभ योव, ऋतुफलम्, पक्षफलम्, वार फलम्, योग भलम्, सारे चक्र, सब दशा फलम्, माल दिशा, दिन दशा, सभी ग्रह योग, वर्षा, धान्यादि विचार, योग विचार, सम्पूर्ण पुस्तक बढ़िया छपाई मूल्य १५) डाक व्यय अलग।

पता—गर्ग प्रकाशन मन्दिर, (c) मथुरा।

श्री गणेश साधना तन्त्र

यह ग्रन्थ रत्न श्री महागणपति साधना के लिए पूर्ण उपयोगी सिद्ध हुआ है। यह महान कलिकात में हर मनुष्य लक्ष्मीवान एवं आरोग्य बनना चाहता है। अतः आप हमारे प्रकाशित ग्रन्थ से जरूर लाभ उठावें। इस ग्रन्थ में प्रातः स्मरण से लेकर महागणपति क्रम, तर्पण, आवरण पूजा, शोडशोपचार, गणेश गीता सम्पुटित, चारों वेदों का पुण्याहवाचन, कवच—स्त्रोत्र, सहस्रनाम द्वादश अद्भुत प्रयोग सहित सम्पूर्ण विवरण दिया गया है। पूर्ण शुद्ध। सुन्दर छपाई वढ़िया कागज, रंगीन चित्रों सहित मू० ५१)०० डाक व्यय अलग।

प्रश्न ज्योतिष

इस पुस्तक में अनेक प्रश्नों का विषय दिया है। यह पुस्तक प्रश्न पूछने वाले तथा प्रश्न बताने वाले दोनों को उपयोगी है। योग देखने की विधि, अमेरिकन भाग्य दर्पण, उन्नति, प्रश्न, नवग्रह, भाग्य दर्पण, आज का दिन किस प्रकार व्यतीत होगा, अधिक अनेक प्रश्नों का उत्तर दिया है। आप हमारी पुस्तक मँगाकर लाभ उठावें पुस्तक का मू० २०)०० डाक खर्च अलग।

मन्त्र महोदधि

इस पुस्तक में शब्दों के ज्ञान मन्त्र, दशा मन्त्र, योगिनी साधन मन्त्र, ग्रह दशा मन्त्र आदि सभी मन्त्रों का समावेश है। एक ही पुस्तक में सभी मन्त्रों का विस्तृत वर्णन, उपयोग करके आप लाभ उठा सकते हैं।

कीमत २०)०० डाक व्यय अलग।

पता—गर्ग प्रकाशन मन्दिर, (c) मथुरा।

श्री महालक्ष्मी तन्त्र सिद्धि

यह पुस्तक लक्ष्मी प्रसन्न के लिए अनोखी साबित हो रही है। आजकल आदमी लक्ष्मीवान बनना चाहता है। अत: आप हमारी प्रकाशित किताब से जरूरी लाभ उठावें। इस पुस्तक में प्रात: स्मरण से लेकर षोडशोपचार पूजा. महालक्ष्मी सिद्धि विधान, सूक्त, कवच, हृदय स्त्रोत, सहस्त्रनाम श्री सूक्त विधान, धारा स्त्रोत, श्री सूक्त वैदिक तथा तान्त्रिक सम्पुट पाठ श्रीसूक्त नामावली, धनदा लक्ष्मी तन्त्र विधान आदि शुद्ध सम्पूर्ण, सुन्दर, छपाई, बढ़िया कागज की कीमत ४०)०० डाक व्यय अलग।

तान्त्रिक अष्ट सिद्धियाँ

सर्व साधारण के हितार्थ अनेक ग्रन्थों, अनेक प्रकार के षोडशी, श्यामा, चन्द्रिका, योगिनी, मंजुघोष, हनुमान कल्प, गणेश साधना, बटुक भैरव आदि के मन्त्र, ध्यान, यन्त्र, जप आदि विषयों और विविध साधनादि का संग्रह किया गया है। इस जगत में ऐसा कोई कार्य नहीं है जो मन्त्र के बल से सिद्ध न हो सके। इसी कारण हमने यह पुस्तक प्रकाशित की है। कृपया हमारी पुस्तक मँगाकर आप लाभ उठावें। मू० २०)०० डाक व्यय अलग।

श्री विद्या तन्त्रम्

इस पुस्तक में श्री विद्या एवं लक्ष्मी प्राप्ती के अनेक यंत्र मंत्र दिये गये हैं। सम्पदा प्राप्ती के लिये श्री विद्या की साधना प्रमुख मानी गई है। श्री विद्या के आचार्यों ने इसे तन्त्रराज कहा है। श्री मन्त्र की निर्माण विधि, उपासना विधि, सम्पूर्ण विधान, नवचक्र तथा सम्बन्धित सभी यन्त्र, तन्त्र, मन्त्र स्त्रोत आदि सम्पूर्ण विवेचन। मू० ८०)००

पता—गर्ग प्रकाशन मन्दिर, (c) मथुरा।

श्री दुर्गा साधना तन्त्र

(प्रामाणिक ग्रन्थ)

यह ग्रन्थ रत्न श्री मां भगवती श्री दुर्गा साधना के लिये पूर्ण उपयोगी है। आजकल हर मनुष्य आरोग्यता, पूर्ण स्वस्थ, लक्ष्मी प्राप्ति और सुख कामना करता रहता है। तथा आधि-व्याधि से मुक्त रहना चाहता है तो आप हमारे प्रकाशित ग्रन्थ रत्न से जरूर लाभान्वित होंगे। इस ग्रन्थ रत्न में दीक्षा काल से लेकर पूर्णाभिषिक्त शोडषांग पूजन, अनेकों अद्भुत प्रयोगों सहित कवच, अर्गला, कीलक दुर्गा सप्तशती, आवरण पूजन, न्यास, ध्यान, स्त्रोत सहित पूर्ण रूपेण संशोधित, आकर्षक छपाई बढ़िया कागज रंगीन चित्रों सहित मूल्य ७१,०० डाक व्यय अलग।

श्री उच्छिष्ट गणपति साधना तन्त्र

यह ग्रन्थ रत्न उच्छिष्ट गणपति साधना के लिए अनोखा सिद्ध हुआ है। आजकल हर व्यक्ति धनवान बनना चाहता है और रोग, पीड़ा, दुख दरिद्रता, मानसिक शान्ति के लिए अनेकानेक प्रयास करता रहता है फिर भी वह उनसे मुक्त नहीं हो पाता है। अतः आप हमारा प्रकाशित ग्रन्थ रत्न खरीदें और लाभ उठायें। इस ग्रन्थ रत्न में उच्छिष्ट गणपति का पूर्ण क्रम प्रदर्शित किया है इसका शोधन आधुनिक पद्धति से किया है।

सुन्दर छपाई, बढ़िया कागज रंगीन चित्रों सहित मू० २०)०० डाक व्यय अलग।

भक्ति सागर बड़ा

समस्त देवताओं की प्रार्थना स्तुति आदि का अभूत पूर्व संग्रह मू० १५) डाक व्यय अलग।

पता—गर्ग प्रकाशन मन्दिर, (c) मथुरा।

घर बैठे ही पुस्तकें वी.पी. द्वारा प्राप्त करें

सूरसागर १००)
तुलसीकृत रामायण भा. टी. ८०)
रामायण भा.टी. गुटका ५०)
रामायण तर्ज राधेश्याम २०)
रविदास रामायण १५)
आल्हा रामायण १५)
महाशिवपुराण भाषा ६०)
सुखसागर ८०)
प्रेम सागर २०)
बृज विलास १५)
महाभारत बड़ा [illegible]
श्री विष्णु पुराण ५०)
श्री मद्देवी भागवत पुराण [illegible]
आल्हा महाभारत [illegible]
महा इन्द्रजाल [illegible]
चीन आसाम बंगाल का जादू [illegible]
कामाक्षा मंत्र १५)
कौआ तंत्र १५)
ताश का जादू १५)
वशीकरण मंत्र १५)
[illegible] सट्टा १५)
[illegible] १५)
[illegible] जन्त्री १५)
[illegible] भड्डरी रघुनाथ ज्योतिष १५)
[illegible] ज्योतिष १८)
[illegible] बोध ज्यो.सार २७)
[illegible] वत्री दीपक ३०)

लघुजातकम २०)
श्री महालक्ष्मी तंत्र सिद्धि ४०)
लग्न चन्द्रिका १५)
श्री बगुलामुखी तंत्र २०)
तांत्रिक अष्ट सिद्धियां २०)
श्री विद्या तन्त्रम ५०)
प्रश्न ज्योतिष २०)
श्री गणेश [illegible] तंत्र ५१)
श्री दुर्गा साधना तंत्र ७१)
श्री उच्छिष्ट गणपति सा. तंत्र २०)
मंत्र महोदधि २०)
स्वप्नफल दर्पण १५)
मुहूर्त चिन्तामणि ३०)
ज्ञान सागरी [illegible] ६०)
तांत्रिक नीलकंठ ५०)
नाड़ी ज्ञान तरंगिणी १५)
बड़ा घर का वैद्य १५)
ऐलोपैथिक गाईड २०)
सचित्र योगासन १५)
पशु चिकित्सा १५)
आयुर्वेद चि. सागर १५)
स्वप्न दोष चिकित्सा १५)
चिकित्सा चन्द्रोदय १५)
सिलाई कटाई शिक्षा १५)
रेडियो ट्रांजिस्टर एवं
इलैक्ट्रिक गा. १५)
हारमोनियम तबला मास्टर १५)

श्री गोपाल पुस्तकालय, मथुरा (सी) (उ० प्र०)